Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

जन ज्ञान

मासिक

सितम्बर १९७६

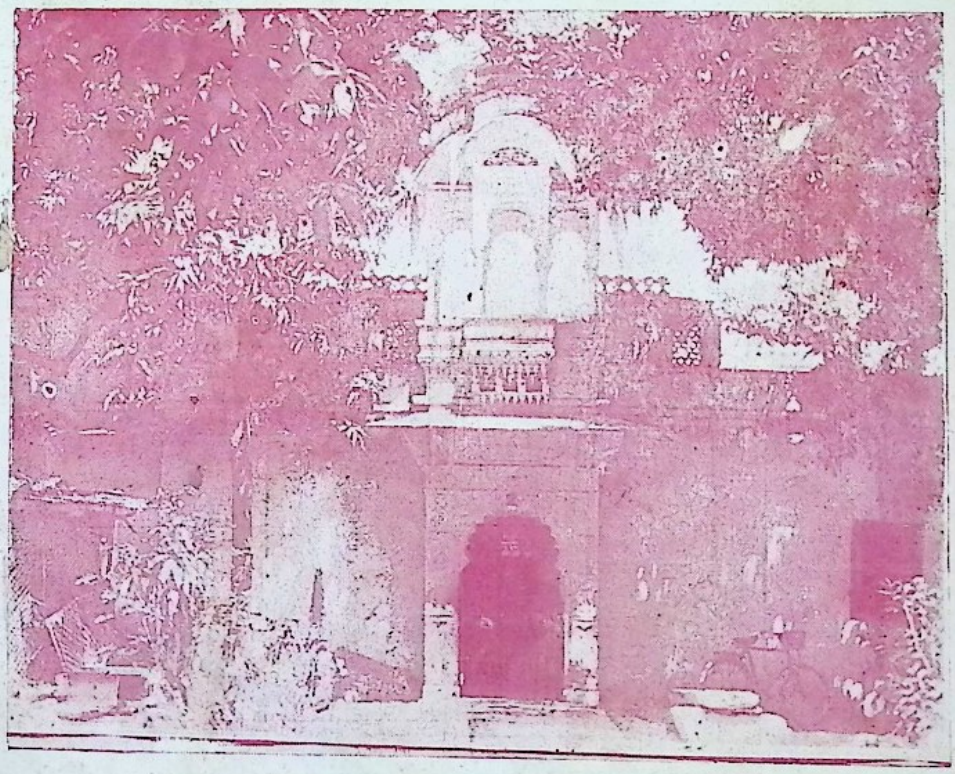

उदयपुर में महाराणा सज्जनसिंह जी
का वह महल : जहां बैठकर
महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश पूर्ण किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द संस्थान की अध्यक्षा पंडिता राकेश रानी को ५००१) का ड्राफ्ट भेंट करते हुए : आर्यसमाज अजमेर के मंत्री और प्रसिद्ध साहित्यकार पं० सूर्यदेव शर्मा एम. ए. डी., लिट्।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन - ज्ञान

मासिक

□

संपादक

राकेश रानी

सह-संपादक

सुमेधा स्नातिका

दूरभाष : ५६६६३६

□

पता

५६७, हरध्यानसिंह मार्ग
[निकट ३१ नाईवाला]
रोल बाग, नई दिल्ली
११०००५

वार्षिक मूल्य १५)
विदेश में ३ पौंड
(हवाई डाक से)
पौंड : समुद्री डाक से
(आजीवन २५१)

वर्ष ७ : अंक ५
आश्विन संवत् २०३३
सितम्बर १९७६

ज्योति वन्दना

कविता लिखनी मुझे नहीं आती,
नहीं आता,
उगते सूरज को नमस्कार करना,
और,
उसे देखकर हँसना,
इसलिए, मेरा कोई मूल्य नहीं,
मैं बरसात में,
शीतल हवाओं में,
जंगल में, नदी किनारे,
सब कुछ देखकर भी,
कुछ नहीं देखती हूँ ।
क्योंकि गहरे अंतर में,
छाया अंकित है,
उस की,
जिसे तुमने न जाना है,
न माना है ।
पद स्वार्थ, भावना से दूर
सरगम के गीतों में,
गुंजन में सांसों की,
वह जब मिलता है,
तब मैं हँसती हूँ,
तुम उसका नाम कुछ भी रख सकते हो,
अपनी-अपनी भाषा में,
उसे जप सकते हो !
पर उससे मिलने की
कामना जब जागेगी,
तुम बदल जाओगे,
सत्य प्रगट होगा तब
और तुम—मैं—वे,
सब उसके प्रकाश से
ज्योतिर्मय हो,
ज्योति की वंदना करेंगे ॥

—ज्योत्स्ना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

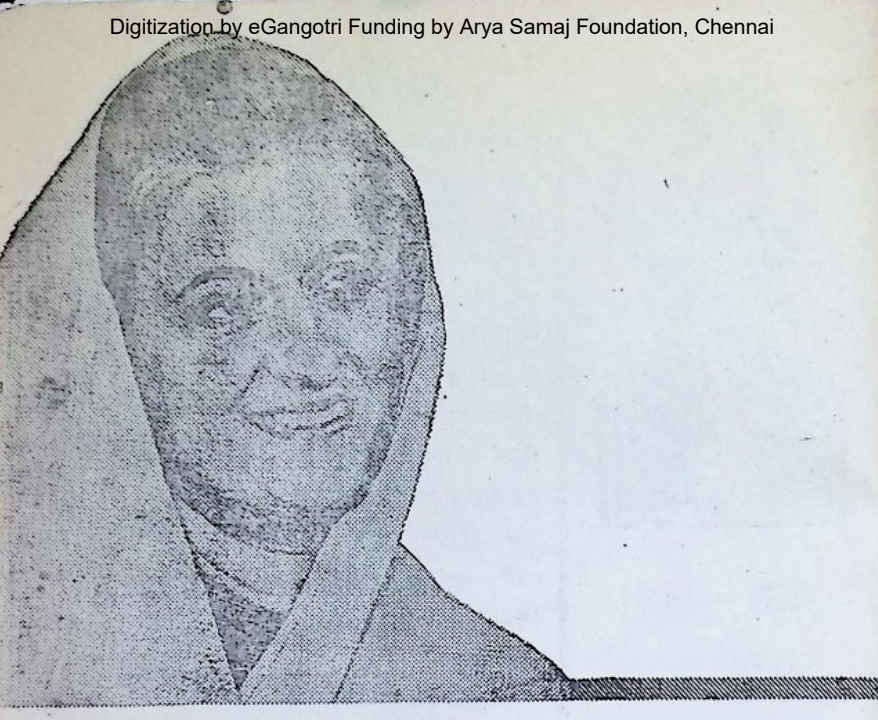

देश की एकता

"आज न केवल उत्पादन बढ़ाना, वितरण सुधारना और समाजवादी कार्यक्रम को तेजी से लागू करना जरूरी है; बल्कि इससे भी अधिक जरूरी देश की एकता को बनाए रखना है।"

इन्दिरा गांधी

आइए! **राष्ट्र निर्माण**
के कार्य में लग जाएं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नींद छोड़ दो

देश में सब कुछ है पर 'धर्म' नहीं है। धर्म बिना सुख-शान्ति आनन्द नहीं रह सकता है। इसलिए धर्म की स्थापना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है।

ग्रामों में धर्म नाम के प्रति श्रद्धा है, पर धर्म का ज्ञान नहीं है। बहुसंख्यक जनता अधर्म को ही अज्ञानवश धर्म समझ रही है। जिसके परिणाम स्वरूप सर्वत्र पाखण्डी ढोंगी अपनी शक्ति बढ़ा रहे हैं।

धर्म के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए, पर वही श्रद्धा यदि अधर्म के प्रति हो तो विनाशकारी हो जाती है। इसीलिये आज की प्रथम आवश्यकता है धर्म-अधर्म से सभी को परिचित कराने की। हमें श्रद्धा को मोड़ देना है परमात्मा के प्रति, जड़ पदार्थ से हटाकर।

देश के लाखों ग्रामों तक अभी धर्म का संदेश नहीं पहुंचा। बड़े-बड़े हजारों नगरों में धर्म का संदेश वाहक कोई नहीं है। लगता है कि सर्वत्र घना अन्धकार है।

इस अन्धकार को मिटाने के लिये आर्यसमाज स्थापित किया गया था। किन्तु आज तो उसके अनुयायियों को गहरी नींद आ गई है। वे तन्द्रा में हैं या माया के व्यामोह में।

ज्ञान-अज्ञान का, धर्म-अधर्म का भेद करने की शक्ति कहीं नहीं। जागरण शंखनाद की गूंज कहीं नहीं, सन्नाटा है चारों ओर।

धर्म प्रचार, वेद प्रचार सब एक है। मन्दिरों में, घरों में, और सर्वत्र जब सत्य गूंजेगा, धर्म जब जीवन को संचालित करेगा, तब हम विश्व निर्माण की ओर अग्रसर होंगे।

किन्तु·····

यह प्रश्न चिन्ह ऐसा है जिसका उत्तर किसी के भी पास नहीं है। आर्य-समाज के कर्णधारों के पास समय नहीं है। उनके मस्तिष्क में कोई रेखा चित्र है न तड़प·····वे तो बस अपनी लकीर पीटने में लगे हैं।

आर्य युवक कायर बन गये हैं। अधिकारी स्वार्थी हैं और जनता किंकर्तव्य विमूढ़। ऐसे में पाखण्डों की बाढ़ आना स्वाभाविक ही है। किन्तु निराश होने से तो काम नहीं चलेगा, हमें जागना होगा, विशेषकर उन्हें जो ऋषि दयानन्द की जय चाहते हैं।

इसलिये हमारा आवाहन है—निद्रा खोलो, नींद छोड़ो, और देश में धर्म का प्रचार करो। ग्रामों में, पिछड़े क्षेत्रों में, नगरों में, सर्वत्र आध्यात्म की गंगा बहाने का व्रत लो, और विजय का सँकल्प लेकर नएयुग का निर्माण करो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी

मनाने के लिये आप क्या कर रहे हैं? इस वर्ष में आपने आपके आर्य समाज ने कितने सत्यार्थ प्रकाश प्रसारित करने का निश्चय किया है?

सत्यार्थ प्रकाश बाँटिये। २) ५० पैसे का सत्यार्थ प्रकाश २) में दीजिये। घर-घर जाइये दो रुपये लीजिये और सत्यार्थ प्रकाश दीजिये।

सत्यार्थ प्रकाश के पोस्टरों से दीवारें भर दीजिये। सत्यार्थ प्रकाश का संदेश पूरे बल से गुंजाइये, और बताइये सभी को कि इस महान् ग्रंथ को पढ़कर अज्ञान दूर-दूर चला जाएगा।

उत्सवों पर साहित्य

प्रत्येक आर्य समाज अपने उत्सवों पर एक निश्चित राशि साहित्य के लिए रखे और सत्यार्थ प्रकाश आदि जीवनी और वेद का भारी संख्या में प्रचार करे।

ट्रैक्ट पोस्टर और साहित्य प्रचार भी उत्सव का अनिवार्य अंग होना चाहिये। साहित्य का प्रचार ही स्थायी प्रचार है। यह हम जितना शीघ्र समझ लें उतना ही उत्तम है।

—राकेशरानी

विवाह के अवसर पर बाँटने योग्य तीन महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

१—वैदिक गृहस्थाश्रम
पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड सजिल्द ६)

२—धरती का स्वर्ग : गृहस्थाश्रम
पं० शिवकुमार शास्त्री संसत्सदस्य १)५०

३—आदर्श परिवार
श्री युगल किशोर जी भू०पू०मंत्री राजस्थान ६० पैसे

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाखंड खंडनी पताका लहराने को वेला है....

—भारतेन्द्र नाथ

१८६७ के,
अप्रैल मास में,
कुंभ के अवसर पर,
पाप और पाखण्ड के,
अधर्म अज्ञान के,
मिटाने हेतु,
देव दयानन्द ने,
हरिद्वार में,
गंगा तट पर,
लहरायी थी,
पाखण्ड-खंडिनी-पताका ।

※

१०० वर्ष बीत गए,
क्रांति की एक सदी,
जिसने धरती के चिन्तन को,
नया मोड़ दिया,
झकझोर दिया,
परिभाषाएं-आशाएँ,
नयी बनीं,
मानस ने सीधा सच्चा रास्ता
ज्ञान के प्रकाश में,
देखा, अनुभव किया,
पाखंड खंडिनी पताका की लहर में ।

※

हिमगिरी सा महान्
देव पुरुष, ज्योति पुंज
योगी और क्रांतदर्शी दयानन्द
युग की कलुष कालिमा को
ललकारता
अकेला
केवल सत्य के बल पर,
बढ़ता गया
पताका लहराती रही,
असत्य काँपता रहा ।
दानवता की समाप्ति का
यह ऐतिहासिक प्रयास था ।

खंडन का अस्त्र
तर्क के तीव्र तीर,
ज्ञान की प्रत्यंचा पर चढ़ कर
जब चले तो,
एक बार ऐसा लगा कि
मत-वादों के गढ़
कांपने लगे हैं,
दुर्जन जन दूर पार
भागने लगे हैं ।
पोप-पादरी, मुल्ला पुजारी
सब घबराये झुँझलाये,
देखकर लहराती
दयानन्द की
पाखंड-खंडिनी-पताका ।

※

वह पताका संदेश वाहक थी,
सत्य की
ज्ञान, धर्म न्याय की,
मानव के मानस की
चिर अभिलाषा पूर्ति की ।
उसके फहराने की आवाज
सुनकर
नयी क्रांति का उदय हुआ
युग की नई आधारशिला
रखी गई,
पनपी,
फली,
और सत्य फैलता गया,
असत्य सिकुड़ता गया ।

※

किन्तु हम
इस पावन धरोहर को
दयानन्द की थाती को,
सम्हाल न सके ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसलिये आज फिर
पाखंडोंने,
मत-वादों ने,
अज्ञान ने, सिर उठाकर
असत्य को चुनौती दी है।
इसलिए हम कहते हैं
१०० वर्ष बाद,
फिर पुराना इतिहास
नयी स्याही से लिखने के लिए
पन्ने उलटते हुये
पाखंड-खंडिनी-पताका
लहरानी होगी।

स्मृतियो, जागो,
जागो युग, फिर एक बार,
धरती के हर कण से
अज्ञान मिटाने के लिए
मनुष्य को मृत्यु मार्ग से
बचाने के लिये
लहराओ,
दयानन्द की वह अमर पताका
जो १८६७ में
हरिद्वार में गंगा तट पर
दयानन्द ने लहराई थी।

फहरो, फहरो,
दयानन्द की पताके
शान से, गौरव से
फहराओ,
हम दयानन्द के वीर सैनिक,
अपने सबल हाथों से
तुम्हारी रक्षा का
दृढ़ संकल्प लेकर
विश्व विजय के लिए
बढ़ रहे हैं,
बढ़ेंगे,
जो भी हमारी राह में आएगा,
तुम्हारी ओर ताकेगा,
हम उससे निपट लेंगे,
तुम लहराओ,
शान से
इसके लिए हम
प्रत्येक संभव बलिदान देंगे।

आप इस तरह भी संस्थान को सहायता कर सकते हैं

१. वेद भाष्य के नये सदस्य बनायें।
२. जन-ज्ञान मासिक व साप्ताहिक के अधिक से अधिक सदस्य बनायें।
३. आजीवन सदस्य जनज्ञान (साप्ताहिक या मासिक) के बनें।
४. भारी संख्या में साहित्य मंगायें और अधिक से अधिक ज्ञान तुरन्त भेजें।
५. दयानन्द-संस्थान के सदस्य बनिए।

हमें विश्वास है कि आप संस्थान के रचनात्मक कामों को रुकने नहीं देंगे।

—:विनीता:—

राकेश रानी पंडित

अध्यक्ष

दयानन्द सँस्थान नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५ सदस्य वेद भाष्य के बना कर भेजिए

और

एक पूरा सैट वेद भाष्य मुफ्त प्राप्त कीजिए

जो आर्यसमाजें या आर्य बन्धु वेद भाष्य के ५ सदस्य एक साथ बना कर भेजेंगे उन्हें हम एक वेदभाष्य का सैट अपनी ओर से उपहार में देंगे।

वेद भाष्य ८ जिल्दों में मूल्य २१५)
२ जिल्दों में मूल्य २०१)

साथ में ५०) का कवर साहित्य मुफ्त

शीघ्रता कीजिए और

मुफ्त वेद भाष्य प्राप्त कीजिए

राकेश रानी
अध्यक्ष

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र में एक बार फिर आत्मविश्वास जागा है

१९७५-७६

अधिक अनुशासन की ओर

* अनुशासन और समय की पाबन्दी में उल्लेखनीय सुधार ।

* सरकारी और निजी संगठनों में कार्य का जल्दी और तेजी से निपटारा !

* कर्त्तव्य निष्ठा और समर्पण की बढ़ती हुई भावना ।

* सहयोग और एकता का बढ़ता हुआ दृष्टिकोण ।

डी ए वी पी ७६/१५३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुन्दर फरनीचर का प्रगतिशील नाम

डिलाईट

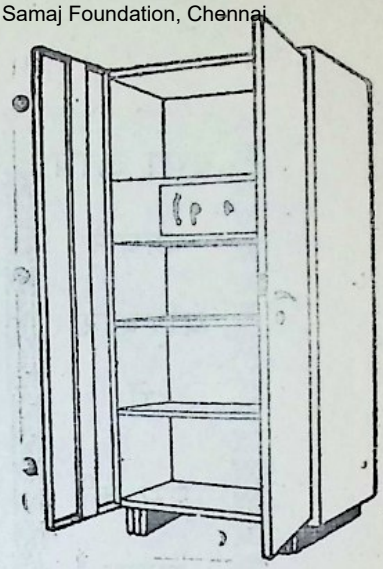

वर्षा उपवन व और कार्यकुशलता के कारण आज डिलाईट पक्की अलमारियां और फर्नीचर सारे भारत में प्रसिद्ध हैं क्योंकि यह देखने में सुन्दर, मजबूत, टिकाऊ और पक्के गों में उपलब्ध हैं। दुकान हो या घर, विवाह हो या कोई शुभ अवसर, यह सबका शोभा बढ़ाता है।

आप भी आज डिलाईट फरनीचर खरीद कर अपने घर, आफिस व दुकान की शोभा बढ़ावें और आनन्द पावें।

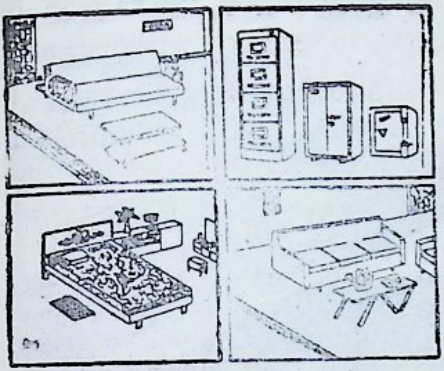

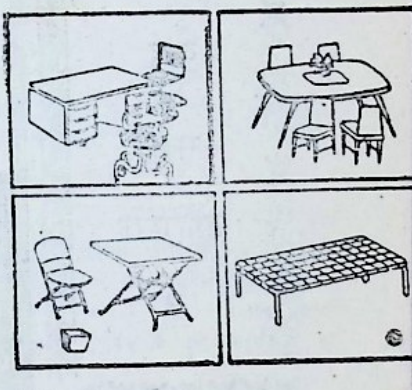

डिलाईट सेफ वर्क्स

कुतुब रोड, दिल्ली-६. फोन 511380

विक्रेता

१ काटेज स्टोर, २० विनय नगर मार्केट, नई दिल्ली।
२. काश्मीर क्राकरी हाऊस, लक्कड़ बाजार, लुधियाना।
३. मित्तल ब्रादर्स, सिरकी बाजार, भटिण्डा। ४. निहालचन्द गोपालदास, अबोहर।
५. महेन्द्रा ब्रादर्स, कोर्ट रोड, मोगा।
६. जैम सेल्स कार्पोरेशन, सेक्टर ७-सी दु० नं० ३० मध्य मार्ग, चण्डीगढ़।
७. हरयाणा आयरन एण्ड स्टील इण्डस्ट्रीज, बाजार हिसारिया, सिरसा।
८. लीला इलैक्ट्रिक कं०, ७० कोतवाली रोड, श्री गंगानगर (राज०)।
९. राणा इण्डस्ट्रीज, लाडपुरा बाजार, कोटा (राज०)
१०. आदर्श इलैक्ट्रिक एण्ड जनरल सप्लायर्ज, नैकाओली, नीमच (म० प्र०)।
११. ओवरसीज ट्रेड एजेन्सीज, केसरगंज, अजमेर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आप
अपने
परिवार
में
प्रभु की
अमर
वाणी
वेद
नहीं
लाएंगे
?

अधिक से अधिक सत्यार्थ-प्रकाश बाँटें
मूल्य : २००) सैकड़ा । २५०) सैकड़ा ।
३५०) सैकड़ा । ५००) सैकड़ा ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिल्ली में उपलब्धि वर्ष की सफलताएं

कीमतें गिरीं

कीमतों में वृद्धि रुकी; मंहगाई की दर शून्य से भी नीचे गिरी; आवश्यक वस्तुओं के वितरण की आदर्श प्रणाली लागू; शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में २५३ सहकारी समितियों तथा २१००० उचित दर दुकानों से सस्ते कपड़े की बिक्री।

बेघरों के लिए घर : भूमिहीनों के लिए भूमि

४१३६ एकड़ कृषि भूमि ४५३८ हरिजन तथा गरीब भूमिहीन परिवारों में वितरित; ८००० आवासीय प्लाट तथा बेघर हरिजनों में वितरित; हरिजनों को मकान बनाने के लिए १० लाख रुपये का अनुदान।

अप्रेंटिसशिप

निर्धारित लक्ष्य ३५०० के स्थान पर ३५२५ नवयुवकों को विभिन्न उद्योगों में अप्रेंटिसों पर लगाया।

समाज विरोधियों के पांव उखड़े

बेईमान व्यापारियों के विरुद्ध २२५६ छापे; कर चोरी के १६ करोड़ रुपये के व्यापारिक सौदों का पता लगाया गया, जमाखोरों, मुनाफाखोरों के विरुद्ध १४ हजार छापे।

छात्रों को राहत

८५३ स्कूलों में बुक-बैंक; पैंसिल कापियाँ आदि सस्ते मूल्यों पर; छात्रावासों में सस्ता भोजन; स्कूलों में सुधार का १२-सूत्री कार्यक्रम; प्राथमिक विद्यालयों के समस्त विद्यार्थियों को मुफ्त पाठ्य-पुस्तकें, गरीब विद्यार्थियों को स्कूल वर्दी मुफ्त देने की योजना पर ८ लाख रु० का व्यय।

उत्पादन बढ़ा

६०० औद्योगिक शैडों का निर्माण; छोटे-छोटे उद्यमियों को ३.५ करोड़ रु० का ऋण वितरित; सब्जी योग्य भूमि का क्षेत्रफल १६.२० हजार हैक्टेयर (१९७२) से बढ़कर १९.७२ हजार (१९७६); बहु उद्देशीय फसलों के क्षेत्रफल में बढ़ावा; सीमान्त किसान एवं श्रमिक विकास एजेंसी द्वारा गरीब किसानों को भरपूर मदद।

स्वच्छ-सुन्दर दिल्ली

शहरी क्षेत्र में साफ-सुथरा वातावरण जामा-मस्जिद के क्षेत्र का पुनर्विकास; सब्जी मण्डी का आजादपुर में स्थानान्तरण; २०० अनधिकृत उद्योगों की अधिकृत क्षेत्र में पुर्नस्थापना; ५०,००० प्लाटों और आय-सुविधाओं से पूर्ण पुनर्वास कालोनियों की स्थापना; गरीब तथा कमजोर वर्ग के लोगों के लिए बेहतर जीवन तथा रोजगार के नये अवसर। दिल्ली को हरी-भरी बनाने के लिए विकास विभाग, ढाई लाख तथा स्कूलों द्वारा एक लाख के वृक्ष लगाए जायेंगे।

ग्राम विकास

५० गाँवों में सफाई, नशाबन्दी तथा परिवार नियोजन का समन्वित कार्यक्रम १९७६-७७ के पहले तीन महीनों में ही लागू; १९७६-७७ के अन्त तक दिल्ली के समस्त गाँवों में इस कार्यक्रम का विस्तार।

दिल्ली परिवार नियोजन में सबसे आगे

प्रजननशील आयु वर्ग के ४१.३% दम्पत्तियों में गर्भ-निरोध उपायों को प्रचलित करके देशभर में कीर्तिमान स्थापित किया है जबकि देशभर का औसत १६.१% ही है।

हम प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के गतिशील और प्रेरणादायी नेतृत्व में प्रभावी परिवर्तन की राह पर अग्रसर हो रहे हैं। आइए हम अपने छोटे-छोटे भेद- भाव को भूलकर देश की राजधानी दिल्ली की शान बढ़ाने के लिए मिल-जुल कर काम करें।

सूचना एवं प्रचार निर्देशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली द्वारा प्रसारित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी, हरिद्वार की
औषधियां प्रयोग करें

गुरुकुल कासारि

खाँसी की अपूर्व गुणकारी औषधि

उपयोग किसी भी कारण से हुई खाँसी, नजला, जुकाम आदि में लाभदायक है।
सेवन विधि दिन में तीन बार छोटी चम्मच लेकर उंगली से चाटें।

आँखों के अनेक रोगों के लिए
संसार प्रसिद्ध

भीमसेनी सुरमा

. . . .

च्यवनप्राश

उत्तम स्वादिष्ट रसायन
शरीर को बलिष्ठ और कान्तिमय बनाता है।

शारीरिक क्षीणता एवं फेंफड़ों के लिए प्रसिद्ध
आयुर्वेद

पो० गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (सहारनपुर)
शाखा कार्यालय- ६३ गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६ फोन नं० २६१४३८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषि दयानन्द का संदेश गुंजाने के लिए
संस्थान को शक्तिशाली बनाने के लिए

दयानन्द संस्थान
के
सदस्य बनिए

★ ★ ★

आपकी जैसी स्थिति हो, श्रद्धा हो उसके अनुसार आप संस्थान के सदस्य बनिए। वर्ष श्रावणी से श्रावणी तक माना जाएगा—

संस्थान के सदस्य

१. १००१ रु० प्रति वर्ष देने वाले 'संरक्षक सदस्य'
२. ५०१ रु० प्रति वर्ष देने वाले 'पोषक सदस्य'
३. १०१ रु० प्रति वर्ष देने वाले 'संचालक सदस्य'
४. ५१ रु० प्रति वर्ष देने वाले 'दाता सदस्य'
५. २५ रु० प्रति वर्ष देने वाले 'सहायक सदस्य'
६. ११ रु० प्रति वर्ष देने वाले 'प्रचारक सदस्य'
७. विद्यादि गुणों के कारण अथवा संस्थान के कार्य के लिए जीवन देने वाले व्यक्ति अध्यक्ष की सहमति से कार्यकारिणी द्वारा जो सदस्य बनाये जायेंगे वे 'आजीवन सदस्य' होंगे।

आप भी आज ही सदस्यता फार्म भर कर भेज दें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नया वैदिक साहित्य

१. धरती का स्वर्ग : गृहस्थाश्रम

लेखक—श्री पं० शिवकुमार शास्त्री काव्य व्याकरण तीर्थ, संसद् सदस्य

पं शिवकुमार जी शास्त्री आर्य समाज के पुराने महोपदेशक रहे हैं। पिछले तीस वर्षों के अपने अनुभवों को उन्होंने "धरती का स्वर्ग : गृहस्थाश्रम' नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

गृहस्थाश्रम को कैसे स्वर्ग बनाया जाए ? इस विषय में शास्त्री जी का मार्ग-दर्शन सभी के जीवन को नयी प्रेरणा देने में समर्थ है।

पुस्तक का मूल्य लागत मात्र १) ५० पैसा है।

२. उपदेश मञ्जरी

महर्षि दयानन्द के उपदेशों का यह संग्रह प्रचार की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य २)

३. धर्म का सार

स्व० पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय लिखित यह पुस्तक प्रचार के लिए अत्यंत उपयोगी है। साधारण व्यक्तियों को समझाने के लिए इसे ६ कथाओं में प्रस्तुत किया गया है। मूल्य १)

४. महान् दयानन्द

महर्षि दयानन्द को पं शिवदयालु जी ने विभिन्न दृष्टिकोणों से इस अनमोल पुस्तक में प्रस्तुत किया है। मूल्य १) ५० पैसे।

५. आदर्श परिवार

राजस्थान के भूतपूर्व मन्त्री श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी जी लिखित यह पुस्तक प्रचार व विवाह आदि पर बांटने के लिए विशेष उपहार है। मूल्य साठ पैसे।

६. प्रभु के चरणों में

प्रसिद्ध विद्वान् पं. हरिशरण जी द्वारा सामवेद के कुछ मन्त्रों की सरल व्याख्या को प्रार्थना रूप में प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों की पढ़ते हुए साधक भाव-विभोर हो जाता है। मूल्य १) ५० पैसे।

अधिक से अधिक मंगाएं : बांटें

जन ज्ञान प्रकाशन नई दिल्ली–११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र में एक बार फिर आत्मविश्वास जगा है।

१९७५-७६

उपभोक्ता की रक्षा

* मूल्य लेबल और मूल्य सूचि का लगाना जरूरी बना कर फुटकर दुकानों में मूल्यों पर नियंत्रण। गरीब लोगों को आवश्यक सामान की निरंतर सप्लाई।

* एक राज्य से दूसरे राज्य को सामान के लाने-ले जाने पर लगी रोक हटाकर सार्वजनिक वितरण व्यवस्था को को कारगर बनाया गया। इस कार्य में सहकारियों को सहायता ली गई।

* उपभोक्ताओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण कुछ उद्योगों में एक मात्र विक्रय एजेंट नियुक्ति की प्रथा समाप्त कर दी गई।

* सभी को उचित दामों पर सामान दिलाने के लिए दिल्ली में सहकारियों और स्वीकृत एजेंसियों के जरिए बिक्री की आदर्श योजना चालू: यह योजना शीघ्र ही कोचिन, कोयम्बतूर, दुर्गापूर और नैनीताल में भी शुरु की जाएगी।

डीएवीपी ७६/१५२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी

रामायण और महाभारत

यह कहना गलत नहीं होगा कि रामायण और महाभारत दो ग्रन्थों ने हमारे राष्ट्र के चरित्र का निर्माण किया है।

हिन्दू धर्म के सभी अनुयायियों के लिए राम धर्म, शौर्य त्याग और करुणा की मूर्ति हैं, रामायण ने अनगिनत मूल्य और आदर्श प्रस्तुत किये हैं जो अनुकरण करने योग्य हैं—सीता का पतिव्रत धर्म, लक्ष्मण की निष्ठा, हनुमान की भक्ति।

रामायण में बच्चों के लिए कितनी रमणीय कहानियाँ हैं, पुरुषों और महिलाओं के जीवन को उससे सांत्वना मार्गदर्शन तथा प्रेरणा मिलती है, अनगिनत कवियों, नाटककारों, चित्रकारों और ग्रामीण कलाकारों के लिए प्रेरणा मुख्य स्रोत हैं।

न केवल भारत में परन्तु एशिया के कई भागों में—जैसे थाईलैंड, हिन्दचीन, इन्डोनेशिया में—इस पर लोगों की श्रद्धा है और यह अति लोकप्रिय है। इससे प्रमाणित होता है कि यह राष्ट्र और सम्प्रदाय की संकीर्णता से ऊपर है।

हमारे अपने देश में प्रत्येक भाषा में रामायण का अनुवाद हुआ है। इनमें से कुछ इतने लोकप्रिय हैं कि लगता है कि मौलिक ग्रन्थ से होड़ ले रहे हों, जैसे तुलसीकृत रामचरित मानस हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों के साधारण लोगों के लिए रामायण का अर्थ बाल्मीकि की अपेक्षा अधिक तुलसीदास से है, उन्हें तुलसी के मानस की कई सूक्तियां कंठस्थ हैं और प्रतिदिन की भाषा के अंग बन गए है।

इसमें सन्देह नहीं कि जब तक गंगा की धारा बहती रहेगी और भारत में प्राणी रहेंगे, रामायण के प्रति श्रद्धा बनी रहेगी।

—(मानस सन्देश से)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्व. पं. बुद्धदेव मीरपुरी

क्या अवतार होता है ?

वेद

स जायत प्रथमः पस्त्यासु महो बुध्ने रजसोऽस्य योनौ ।
अपादशीर्षा गुहमानोऽन्ता योयुवानो वृषभस्य नीले ॥

ऋ० ४।१।११

जो परमेश्वर इस संसार के कारण प्रकृति में प्रथम चेष्टा उत्पन्न करता है तथा इस बलिष्ठ लोक की रचना व प्रलय करता है वह परमेश्वर शिर वा पाँव आदि अवयवों से रहित है।

इस मंत्र से यह सिद्ध है कि परमात्मा के पाद आदि अवयव नहीं होते।

अपादेति प्रथमा पद्वतीनां कस्तद्वां मित्रावरुणा चिकेत ।
गर्भो भारं भरत्याचिदस्य ऋतं पिपर्ति अनृतं नि तारीत् ॥

ऋ० १।१५२।३

वह भगवान् पैर वाले वा पैर वालियों में (अपाद) पांव रहित है। हे अध्यापक वा उपदेशक तुम में से उसको कौन जानता है ? वही इस संसार का ग्रहण करने वाला तथा भरण-पोषण करने वाला है, सत्य की पालना तथा असत्य का नाश करने वाला है।

इस मंत्र में भी यह बात स्पष्ट हो गई है कि प्रभु शरीर वाले जीवों में अशरीर है।

इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे पृथिव्या इन्द्रो अपामिन्द्र इत् पर्वतानाम् ।
इन्द्रो वृधामिन्द्र इन्मेधिराणमिन्द्रः क्षेमे योगे हव्य इन्द्रः ॥

ऋ० १०।८९।१०

इन्द्र द्यौ पर शासन कर रहा है। इन्द्र पृथिवी पर शासन कर रहा है। इन्द्र ही जलों तथा पर्वतों पर शासन करता है। इन्द्र मेघों पर शासन करता है। इन्द्र बढ़ने वालों पर शासन करता है। इन्द्र ही बुद्धिमानों पर शासन करता है। इन्द्र ही नूतन प्राप्ति के लिये पुकारने योग्य है, तथा इन्द्र ही प्राप्त किये की रक्षा कर सकता है।

इन सब पर शासन कभी शरीरधारी नहीं कर सकता क्योंकि उसकी शक्ति परिमित होती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यस्तिष्ठति चरति यश्च वंचति यो निलायं चरति यः प्रतंकम् ।
द्वौ सन्निषद्य यन्मंत्रयेते राजा तद्वेद वरुणस्तृतीयः ॥

जो खड़ा है, जो चलता है, जो धोखा देता है, जो छिप कर चलता है, जो दो मनुष्य छिप कर बात करते हैं, उसको भी परमेश्वर जानता है ।

उतेयं भूमिर्वरुणस्य राज्ञः उतासौ द्यौर्बृहती दूरे अन्ता ।
उतो समुद्रौ वरुणस्य कुक्षी उतास्मिन्नल्प उदके निलीनः ॥

यह भूमि तथा यह द्यौ, जिसके किनारे बहुत दूर हैं, वरुण की है । वह पानी की एक छोटी सी बूंद में भी समाया हुआ है ।

उतो यो द्यामतिसर्पात् परस्तात् न स मुच्यातै वरुणस्य राज्ञः ।
दिवस्पशः प्रचरंतीदमस्य सहस्राक्षा अति पश्यंति भूमिम् ॥

चाहे कोई द्यौ से परे भी निकल जावे वह परमात्मा के दंड से नहीं छूट सकता क्योंकि उसकी गुप्त शक्तियाँ सहस्राक्ष होकर सब को देख रही हैं । यह सर्व-व्यापकता, सर्वज्ञता तथा सर्व-दण्डनीयता जो-जो वरुण-सूक्तों में विशेषतया प्रतिपादन की गई है, कभी भी शरीरधारी में नहीं हो सकती ।

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत् ।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ॥

य० ४०।४ ॥

महीधर भाष्यम्

देवा द्योतनात्मकाश्चक्षुरादीन्द्रियाणि एनत् प्रकृतात्मतत्त्वं न प्राप्नुवन्तः । चक्षुरादिभ्यो मनो जवीयोऽतो मनोव्यापारे व्यवहितत्वादात्मनः आभासमात्रमपि देवानां गोचरो न भवतीत्यर्थः ।

प्रकाशक चक्षु आदि इन्द्रिय परमात्मा के आभास-मात्र को भी प्राप्त नहीं कर सकते । यदि परमात्मा साकार होता तब उसको इन्द्रिय क्यों नहीं प्राप्त कर सकते ? इससे सिद्ध है कि परमात्मा साकार वा शरीरी नहीं है ।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् । कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥

यजु० ४०।८

महीधर भाष्यम्

योऽयमतीत संप्रोक्त आत्मा स पर्यगात् परितः सर्वतः गच्छति नभोवत् सर्वं व्याप्नोति । शुक्रः शुद्धो अकायोऽशरीरः । लिङ्गशरीर वर्जित इत्यर्थः । अव्रणोऽक्षतः । अस्नाविरः शिरारहितः अव्रणोऽस्नाविरः इति विशेषणद्वयेन स्थूलशरीरप्रतिषेधः । अधर्मादि वर्जितः । स्वयमेव भवतीति येषामुपरि भवति यश्चोपरि भवति स स्वयमेव भवतीति । स्वयंभूः स नित्य ईश्वरः सर्वं कृतवानित्यर्थः ।

इस मंत्र के भाष्य में महीधर ने यह स्पष्ट स्वीकार किया है कि परमात्मा स्थूल शरीर वा लिङ्ग-शरीर से रहित है । स्वयंभू का अर्थ भी नित्य किया है । यानि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वयं है, किसी कारण से उत्पन्न नहीं होता। यह मंत्र पौराणिकों के लिये वज्र-तुल्य है।

शंका

जब अकाय कह दिया पुनः अव्रण, अस्नाविर के कहने की क्या आवश्यकता है? क्योंकि अकाय से ही सब कार्य सिद्ध हो जाता है इससे सिद्ध है कि परमात्मा साकार भी है।

समाधान

अष्टाध्यायी में आता है—

निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः। ३।३।४१

इस सूत्र से काय शब्द निवास, चिति और शरीर आदि कई अर्थों में सिद्ध किया है इस लिये अकाय से कोई भिन्न अर्थ भी सिद्ध हो सकता है। वेद ने अव्रण आदि विशेषण लिख कर यह सिद्ध कर दिया कि अकाय का अर्थ शरीररहित ही है।

महीधर ने इसका यह समाधान किया है कि अकाय से लिंग शरीर का निषेध है तथा अव्रण वा अस्नाविर से स्थूल शरीर का निषेध है।

शंका

ऋ० १०।३।३ में स्पष्ट रामावतार का वर्णन आता है पुनः आप वेद-विरुद्ध अवतार खंडन कैसे करते है?

समाधान

भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात्।
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन् रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात्॥

ऋ० १०।३।३

सायण भाष्यम्

भजनीय कल्याणः भजनीयया दीप्त्या उषसा वा सेव्यमानः अग्निः आगात् आजगाम गार्हपत्यादाहवनीयमागच्छति पश्चात् जरयिता शत्रूणां सोऽग्निः स्वयं सारिणीं भगिनीं वाऽऽगतामुषसं अभिगच्छति सुप्रज्ञानैः वारकैः तेजोभिः रामं कृष्णं शार्वरं तमः सायं होमकाले अभिभूय तिष्ठति।

दीप्तिवाला अग्नि गार्हपत्यादि स्थान से आहवनीयाग्नि स्थान में आता है। वह अग्नि शत्रुओं का नाश करने वाला राम रात्रि के काले अन्धकार को नाश करता है।

यहां सायणाचार्य ने राम वा कृष्ण के अर्थ रात्रि का काला अन्धकार किया है। यही नहीं प्रत्युत अग्नि राम का नाश कर देता है। मैं इन सनातन बात के मानने वालों से पूछता हूँ कि अब तुम्हारा सनातन धर्म कहाँ गया जो सायणाचार्य के विरुद्ध मन्त्रार्थ करते हो? क्या सायण को रामावतार का पता नहीं था?

सत्यार्थः

कल्याणस्वरूप जीव जब कल्याणकारिणी मति के साथ स्वसा स्वयं प्राप्त परमात्मा को जानता है तब परमेश्वर अपने विज्ञान के द्वारा जीव के राम अन्धकार को नष्ट कर देता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शंका

ऋ० ४।७।६ में कृष्णावतार का वर्णन आता है, आप इसका क्या अर्थ करेंगे ?

समाधान

कृष्णं त एम रुशतः पुरो माश्चरिष्ण्वर्चिर्वपुषामिदेकम् ।
यदप्रवीता दधते ह गर्भं सद्यश्चिज्जातो भवसीदु दूतः ।।

सायण भाष्यम्

हे अग्ने ! रोचमानस्य तव सम्बन्धी एमन् शब्देन गमनमार्ग उच्यते । एम वर्त्म कृष्णवर्ण भवति तव सम्बन्धिनी दीप्तिः । पुरस्ताद् भवति संचरणशीलं स्वकीयं तेजः रूपवतां तेजस्विनां मुख्यमेव भवति यं त्वां अप्रवीता अनुपगतो यजमानः त्वज्जननहेतुमरणि धारयति सद्य एव उत्पन्नः सन् यजमानस्य दूतो भवस्येव ।

यहाँ सायणाचार्य ने इस मन्त्र में अग्नि का वर्णन करते हुए 'कृष्ण एम' का अर्थ काला मार्ग किया है । कृष्ण शब्द को विशेष्य नहीं किया किंतु वर्त्म का विशेषण माना है । अप्रवीता का अर्थ यजमान किया है अतः जहाँ पौराणिक सायण के अर्थ के विरुद्ध कृष्ण अवतार सिद्ध करते हैं वहाँ इस मंत्र से अवतारसिद्धि असंभव है । केवल कृष्ण शब्द के आने से अवतार सिद्ध नहीं हो सकता अन्यथा इस मन्त्र का क्या करोगे ?

प्र मंदिने पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिश्वना ।
अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वंतं सख्याय हवामहे ।।
ऋ० १।१०१।१

कृष्णो नाम कश्चिदसुरस्तेन निषिक्ता गर्भास्तदीयां भार्यां निरहन् अवधीत् कृष्णमसुरं हरया पुत्राणामप्यनुत्पत्त्यर्थं गर्भिणीस्तस्य भार्या अप्यवधीत् कृष्णेन निषिक्ता गर्भाया सुताः ।

सायण का भाव यह है कि इन्द्र ने कृष्ण नाम वाले राक्षस को मारा तथा उसकी गर्भवती स्त्री को मारा ताकि उसके गर्भ से कोई बालक उत्पन्न न हो । बतलाओ अब क्या करोगे ? यहाँ तो कृष्ण का वा उसकी गर्भवती स्त्री का वध लिखा है ।

शंका

ऋ० १।१५४।२ में नृसिंहावतार का विस्तार से वर्णन आता है जिसका किसी प्रकार भी समाधान नहीं हो सकता ।

समाधान

प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु अधिक्षियंति भुवनानि विश्वा ।।

इस मन्त्र का देवता विष्णु है जिसके अर्थ ही व्यापक हैं । वह विष्णु अपने बल वा पराक्रम से सबके द्वारा स्तुति किया गया है जैसे वन में रहने वाला सिंह बलवान् होता है तथा सब उसकी स्तुति करते हैं । यहाँ विष्णु उपमेय तथा सिंह उपमान है । नृसिंहावतार का नाममात्र भी वर्णन यहाँ नहीं है । यदि स्वयं सिंह रूप होता तब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपमान की क्या आवश्यकता थी। तीन अर्थात् पृथिवी, अन्तरिक्ष वा द्युलोक में उस के सब लोक निवास करते हैं। पद के अर्थ पाँव के नहीं हैं। स्वयं वेद कहता है— 'तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः' उस भगवान् के स्वरूप को विद्वान् लोग देखते हैं।

शंका

ऋ० १०।२७।१६ में कपिलावतार का प्रतिपादन आता है। क्या यह बात भी मिथ्या है?

दशानामेकं कपिलं समानं तं हिन्वंति क्रतवे पार्याय।
गर्भं माता सुधितं वक्षणास्ववेनन्तं तुषयंती बिभर्ति॥

दश संख्या वाले जो अङ्गिरा के गोत्र वाले हैं उनमें कपिल एक ऋषिमुख्य है। यहाँ सायणाचार्य ने कपिल को १० अवतारों में एक मुख्य अवतार नहीं माना किन्तु १० ऋषियों में एक ऋषि माना है। अगर यहाँ अवतार का वर्णन था तब सायण ने इसका अर्थ १० अवतारों में कपिल अवतार मुख्य है ऐसा क्यों किया? तब 'कृष्णस्तु भगवान् स्वयं' वाला आपका कथन कहाँ गया?

स्वामी शंकर ने उपनिषद् का भाष्य करते हुए कपिल को ऋषि माना है अवतार नहीं, तथा स्मृति प्रकरण में लिखा है—

न सिद्धेरपि सापेक्षत्वात् धर्मानुष्ठानापेक्षा हि सिद्धिः।
पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत् सरित्।

य० । ३४ । ११

दयानन्द भाष्यम्।

पंच ज्ञानेन्द्रियवृत्तयः नदीवत् प्रवाहरूपाः प्रशस्त विज्ञानवतीं वाचं प्राप्नुवन्ति समानं मनोरूप स्रोतः प्रवाहो यासां ताः पंच ज्ञानेन्द्रिय शब्दादिविषयप्रतिपादनेन पंच प्रकाराः स्वनिवासे भवति सरति गच्छति सा।

पाँच ज्ञानेन्द्रियों की वृत्तियें नदीवत् प्रवाह वाली हैं। प्रशस्त ज्ञानवाली वाणी को प्राप्त होती हैं। मन रूपी स्रोत इन में समान है। वह सरस्वती शब्दादि विषयों का प्रतिपादन करती हुई पांच प्रकार की होती है। यहाँ भी इन्द्रियों में मन को समान बतलाया है।

कपिल

कमेः पश्च। (उणादि० १।५५) कमु धातु से इलच् प्रत्यय, "कामयतेऽसौ कपिलः"।

कामना करने वाला मन यहां कपिल है।

कपिलादि की सिद्धि सापेक्ष थी। धर्मानुष्ठान से वे सिद्ध बने थे। क्या अवतार भी धर्मानुष्ठान से सिद्धि प्राप्त करते हैं। पुनः उनमें वा जीवों में भेद क्या हुआ? जब कपिल अवतार थे तब तुम्हारे कहने के अनुसार उन्होंने सांख्य में नास्तिक मत का—ईश्वर नहीं है इस बात का प्रचार क्यों किया? क्या १०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अवतारों में वह इस लिये मुख्य थे तथा स्वामी शंकर ने उनके मत का इतना प्रबल खंडन क्यों किया ? क्या अवतार भी अवतार का खंडन करता है ? शंकर तथा कपिल दोनों ही अवतार थे ।

सत्योऽर्थः

१० इन्द्रियों में कपिल ज्ञान वाला मन प्रधान है । इन्द्रिय रूपी नदियों में मानसिक धाराएं बड़े वेग से बहती हैं । सत्य बुद्धि माता की तरह मन को सन्मार्ग पर चलाती है ।

शंका

ऋ० ९।९७।७ में वराह अवतार का प्रतिपादन आता है । पुनः अवतारवाद को आर्यसमाजी स्वीकार क्यों नहीं करते ?

समाधान

प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति ।
महिव्रतः शुचिबंधुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥

सायण भाष्यम्

उशनेव एतन्नामक ऋषिरिव कर्मस्तोत्रं उच्चारयन् अयं ऋषि इन्द्रादीनां जन्मानि ब्रवीति । महीव्रतः प्रभूतकर्मा दीप्ततेजस्कः शोधकः वरंच वर अहः वराहः तद्वान् सोम शब्दं कुर्वन् पदानि पात्राणि अभिगच्छति ।

शंका

अथर्व १२।१।४८ में स्पष्ट वराह अवतार का वर्णन आता है ।

मल्वं बिभ्रती गुरु भृद् भद्र पापस्य निधनं तितिक्षुः ।
वराहेण पृथिवी संविदाना सूकराय विजिहीते मृगाय ॥

वराह शब्द के विषय में निरुक्तकार लिखते हैं—

वराहो मेघो भवति । वराह अयमपि इतरो वराह एतस्मादेव-वृमूलानि वरं वरं मूलं वा बृहतीतिवा । नि० ४।५

धारण सामर्थ्य से युक्त भारीपन या बहुतों को धारण करने वाली पुण्यात्मा तथा पापी सब को सहन करने वाली मेघ से सब कुछ प्राप्त करती हुई सुन्दर किरण वाले सूर्य को प्राप्त होती है यानि सूर्य की आकर्षण शक्ति से कार्य करती है ।

(वराह) शब्द-सिद्धि

वर+आङ्+हन्+वा हृल् वराय आहन्ति वरं आहरतीति वराहः ।

इस मंत्र में कहीं भी वराहावतार का वर्णन नहीं है ।

यद्वा कश्चन वराहः पादेन भूमिं विक्रममाणः शब्दं करोति तद्वत् ।

यहाँ सायणाचार्य ने वराह के अर्थ सोम के किये हैं एक शब्द भी वराहावतार के सम्बन्ध में नहीं कहा, मैं तुम से पूछता हूं अब तुम्हारा सनातन धर्म कहां गया जब कि सायण को इस में वराहावतार नहीं सूझा जो उन्होंने वराह के अथ सोम किये । मंत्र का देवता भी सोम है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थः

विद्वान् पुरुष की तरह उपदेश देता हुआ भगवान् संसार के सूर्यादि पदार्थों की उत्पत्ति को वेद द्वारा बतलाता है। प्रभूतकर्म वाला पवित्र बंधु पवित्र परमात्मा ऋषियों को अनेक ज्ञानों का उपदेश देता हुआ प्राप्त होता है।

शंका

य० ३१।१९ में यह सुस्पष्टतया प्रतिपादन है कि परमात्मा अनेक अवतारों को धारण करता है।

समाधान

प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्तरजायमानो बहुधा वि जायते।
तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥

महीधर भाष्यम्

यः सर्वात्मा प्रजापतिः अन्तर्हृदि स्थितः सन् गर्भे चरति गर्भमध्ये प्रविशति यश्चाजायमानोऽनुत्पद्यमानो नित्यः सन् कार्यकारणरूपेण प्रपंचरूपेण उत्पद्यते ब्रह्मविदस्तस्य स्वरूपं पश्यंति भूता जातानि तस्मिन्नेव कारणात्मनि सर्वं तदात्मकमेव इत्यर्थः।

वह प्रजापति सब के अन्दर विद्यमान प्रपंचरूप से उत्पन्न होता है, नित्य है। सब संसार ब्रह्ममय है। इस मंत्र में महीधर ने अवतारवाद की बुनियाद ही उखाड़ डाली। जब सम्पूर्ण संसार ही ब्रह्म है तब भगवान् के अवतार के क्या अर्थ हैं। अवतारवादी पौराणिक महीधर के विरुद्ध अजायमान का अर्थ जायमान करते हैं। श्री भाष्य पृ० १०४४ में रामानुजाचार्य ने भी अजायमान पद माना है। परमात्मा गर्भ में आता है इसके क्या अर्थ हैं? क्या वह गर्भ में प्रथम नहीं होता, अगर होता है तब गर्भ में आने के क्या अर्थ हैं। जब वह सर्वव्यापक है, तब एक गर्भ में कैसे आजायगा? अगर कहीं सर्वव्यापक होता हुआ भी वह एक विशेष स्थान में विशेष कार्य करता है तब बिना अवतार के भी वह संसार में विशेष कार्य कर रहा है। पुनः अवतारवाद मिथ्या है।

सत्यार्थः

वह परमात्मा सब के हृदय में विद्यमान है तथा शरीर न धारण करता हुआ भी अनेक प्रकार से प्रकट हो रहा है। किसी को दंड देकर, किसी को सुख देकर, किसी को मार कर, किसी की उत्पत्ति द्वारा अनेक प्रकार से प्रकट हो रहा है, अजायमान तथा उसमें सब भुवन स्थित हैं। यह दो बातें महत्त्व की हैं जो अवतारवाद का खंडन करती हैं।

शंका

ऋ० ६।४७।१६ में यह प्रतिपादन किया है कि परमात्मा अनेक अवतार धारण करता है, जिनमें १० बहुत प्रसिद्ध हैं।

समाधान

शृण्वे वीर उग्रमुग्रं दमायन्नन्यमन्यमतिनेनीयमानः।
एधमानद्विलुभयस्य राजा चोष्कूयते विश इन्द्रो मनुष्यान् ॥१६॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वीर पुरुष अत्यन्त उग्र होता है, दुष्टों का दमन करता है। पापियों को कारागार में डालता है, दुष्टों से द्वेष करता है, सब मनुष्यों पर शासन करता है।

रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रति चक्षणाय ।
इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश ॥१२॥

जीवात्मा जिस जिस योनि में जाता है उसी का रूप बन जाता है। उसके रूप को देखने के लिये उसका वास्तविक रूप देखना चाहिये। जीवात्मा अनेक बुद्धि वा अनेक कर्मों के द्वारा बहुरूप प्रतीत होता है जो कि एक सौ दस नाड़ियों के द्वारा विविध प्रकार के कर्म करता है।

छांदोग्य में भी आता है शतं चैका च हृदयस्य नाड्यः। एक सौ एक नाड़ियें हृदय से निकलती हैं। इन मंत्रों में अवतार की गन्ध भी नहीं, किंतु जीवात्मा का वर्णन है।

शंका

अ० १०।२।२७ में यह बात लिखी है कि वही परमात्मा स्त्री, पुरुष, कुमार कुमारी अनेक प्रकार के अवतार धारण करता है।

समाधान

ज्येष्ठ ब्रह्म सूक्त में ब्रह्म जीव प्रकृति तीनों पदार्थों का प्रतिपादन आता है। ज्येष्ठ का अर्थ यह है कि जीव तथा प्रकृति से ब्रह्म बड़ा है। यदि जीव प्रकृति नहीं तब ज्येष्ठ ब्रह्म यह शब्द भी नहीं बन सकता। इसी सूक्त में तीनों का वर्णन आता है। मन्त्र अधोलिखित हैं—

बालादेकमणीयस्कमुतैकं नैव दृश्यते ।
ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया ॥२५॥

एक जीवात्मा बाल से भी सूक्ष्म है एक न की तरह प्रतीत होता है। वही सब से बड़ी प्रिय देवता है। इस मंत्र में जीव या ईश दोनों का वर्णन है।

इयं कल्याण्यजरा मर्त्यस्यामृता गृहे ।
यस्मै कृता शये स यश्चकार जजार सः ॥२६॥

यह प्रकृति अजर है। जो मनुष्य प्रकृति में सोता है वह जीर्ण होता है। इसमें प्रकृति का वर्णन है।

त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत . वा कुमारी ।
त्वं जीर्णो दण्डेन वंचसि त्वं जातो भवसि विश्वतो मुखः ॥२७॥

हे जीव ! तू ही स्त्री तू ही पुमान् कुमार वा कुमारी होता है। तू ही बूढ़ा होकर डंडे के सहारे चलता है। तू ही वंचना करता है।

इसमें जीव का वर्णन है परमात्मा का नहीं, परमात्मा जीर्ण वा ठग नहीं हो सकता। इसी सूक्त का ४४ मंत्र देखिये—

अकामो धीरोऽमृतः स्वयंभू रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः ।
तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम् ॥

इस मंत्र में अकाम अजरादि विशेषणों से सिद्ध है कि वह जीर्ण नहीं होता, किन्तु जीव होता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शंका

य० ३२।४ में लिखा है कि परमात्मा गर्भ में आता है इस अकाट्य मन्त्र से अवतार-वाद सिद्ध है।

समाधान

एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः।
स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः॥

उव्वट भाष्यम्

एष एव देवः प्रदिशः दिशाश्च सर्वा अनुव्याप्य वर्तते तिर्यगूर्ध्वमधश्चेति। पूर्वो ह जातः अनादिनिधनः संभूतः। स उ गर्भे अन्तः स एव च मातुरुदरे अन्तर्गर्भे व्यवतिष्ठते। स एव जातः स एव च जनिष्यमाणः तदुक्तं सर्वं खलु इदं ब्रह्म तज्जलानिति शांत उपासीत प्रतिपदार्थमज्जनः। हे जनाः सर्वतोमुखः सर्वतोऽक्षि शिरो ग्रीवा पाणिपादः अचिंत्यशक्तिरित्यर्थः॥

यह देव नीचे ऊपर सब दिशाओं में व्यापक है, अनादिनिधन है। वही माता के गर्भ में विद्यमान है, वही हुआ है, होगा अर्थात् सब संसार ब्रह्म है। सब ओर अनादि वाला यानि अचिंत्य शक्ति है। इस मंत्र के भाष्य में उव्वट ने अवतारवाद का मूलोच्छेद कर दिया है। क्योंकि जब सारा संसार ब्रह्म है तब राम, रावण, कंस, बलि आदि सब ही ब्रह्म हुए, धर्मात्मा पापात्मा सब ही हैं पुनः अवतार किस के लिए होगा? जब मुक्त जीव की पुनरावृत्ति नहीं होती तब ब्रह्म जन्म कैसे लेगा?

गर्भ शब्द विचार

गर्भ शब्द को देखकर बहुत पौराणिक भ्रम में पड़ जाते हैं। अतः गर्भ शब्द का विशेष विचार किया जाता है।

परमात्मा

गर्भो देवानां पिता मतीनां पतिः प्रजानाम्।
सं देवो देवेन सवित्रा गत सं सूर्येण रोचते॥ य० ३७।१४

महीधर भाष्यम्

देवो दीप्यमानो महावीरो देवेन सह संगच्छते। देवानां दीप्तानां रश्मीनां दृश्यमानानां सर्वेषां वा ग्रहीता एष वै गर्भो देवानां य एष तपति एष हीदं सर्वं संगृभ्णाति एतेनेदं सर्वः गृभीतमेष उ प्रवर्ग्यः॥

श० १।४।१।४।२ पृ० ६८५

वह परमेश्वर वा सूर्य सब देवों का, दृश्यमान पदार्थों का गर्भ ग्रहण करने वाला है। यहाँ सूर्य वा परमेश्वर का नाम गर्भ ग्रहीता है।

गर्भो गृभेर्गृणात्यर्थे गिरत्यनर्णनिति॥नि० १०।२३

परमेश्वर अनर्थों को नष्ट करता है अतः उस को गर्भ कहते हैं।

गर्भं स्तुत्यं वन्दनीयं सायण अ० ३।१०।१२

भगवान् को गर्भ इस लिये भी कहते हैं कि वह वन्दनीय है।

जीव का नाम गर्भ है

गर्भोऽसि ओषधीनां गर्भो वनस्पतीनां,
गर्भो विश्वस्य भूतस्य अग्ने गर्भो अपामसि॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हे जीवात्मन् तू ओषधि, वनस्पति सब भूतों का गर्भ यानि ग्रहण करने वाला है।

अग्निनाम

विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भः आरोदसी अपृणाज्जायमानः। वीडुं चिदद्रिं अभिनत् परायन् जना यदग्निमयजन्त पंच। य० १२।२३

महीधरभाष्य

भूतजातस्य वायु आत्मजा गर्भं स हि प्राण भावेन भूतानां अन्तः संचरति।

कृष्णस्य गर्भं जगतोऽतिभरावसन्नं पाणि प्रहार परिरुग्ण फणातपत्र

दृष्ट्वा हिमाद्यमुपसेदुरमुष्य पत्न्य आर्ताः श्लथद् वसन भूषण केश वन्धाः। भा० १०।१६।३१

जिस कृष्ण के गर्भ मध्य में सम्पूर्ण संसार है। यहाँ गर्भ के अर्थ मध्य हैं।

मध्य अर्थ वाचक

इस साहित्य दर्पण के प्रमाण में संदेहगर्भालंकार के अर्थ हैं, जिस के गर्भ यानी मध्य में संदेह हो इस से सिद्ध है कि गर्भ के अर्थ मध्य भी हैं।

उपर्युक्त प्रमाणों से सिद्ध हो गया कि गर्भ शब्द के अर्थ परमात्मा, आत्मा, अग्नि, वायु आदि अनेक हैं अतः केवल गर्भ शब्द के आने से अवतार सिद्ध करना मूर्खता है।

जिन मन्त्रों में 'गर्भे अन्तः' शब्द आता है उनमें परमात्मा को सर्वव्यापक बतलाया है जिससे कोई यह न समझे कि परमात्मा जीव की तरह शरीर धारण करता है। इसी मन्त्र में लिखा है कि परमात्मा सब दिशाओं में व्यापक है। इस बात से ही अवतार का निषेध हो जाता है।

उपनिषत् प्रमाणम्

दिव्यो ह्यमूर्तः पुरुषः स बाह्याभ्यंतरो ह्यजः।
अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो ह्यक्षरात् परतः परः॥

मुं० खं० १।२

वह परमेश्वर अमूर्त, अन्तर्बहिः व्यापक, अज, प्राणरहित, मन रहित, शुद्ध है।

यत्तददृश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुश्रोत्रं तदपाणिपादं नित्यं विभुः सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं तद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः॥मुं० १।७

वह परमेश्वर अदृश्य, अग्राह्य, अगोत्र, नेत्र श्रोत्र से रहित, हाथ पांव से रहित, नित्य, विभु, सर्वव्यापक है। इन विशेषणों से स्पष्ट अवतार का खंडन होता है।

वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं सर्वगतं विभुत्वात्।
जन्म निरोधं प्रवदन्ति तस्य ब्रह्मवादिनो हि प्रवदन्ति नित्यम्।

श्वेता० ॥२।१॥

वह पुरुष, अजर, अमर, सर्वव्यापक, विभु वा नित्य है, ब्रह्मवादी कहते हैं कि वह जन्म नहीं लेता। यहां स्पष्ट ही अवतार का निषेध है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनं ।
हृदा हृदिस्थं मनसा य एनं एवं विदुरमृतास्ते भवन्ति ।।

उस परमेश्वर का रूप नहीं है, कोई भी उसको आँखों से नहीं देख सकता, हृदय से वा मन से ही उसका दर्शन होता है।

पौराणिक उस को साकार वा निराकार दो प्रकार का मानते हैं, यदि वह साकार है तब प्रत्येक उसको आँख से देख सकता है। पुनः इस निषेध की क्या आवश्यकता है।

शंका

छां० ३।१६।६ में कृष्णावतार का स्पष्ट वर्णन आता है पुनः अवतार-निषेध कैसे करते हो ?

समाधान

तद्धैतद् घोर आङ्गिरसः कृष्णाय देवकीपुत्राय उवाच ।
इत्यादि

घोर नामक अङ्गिरा ऋषि ने देवकी के पुत्र कृष्ण को यज्ञ का उपदेश दिया। इस प्रकरण में कहीं भी यह नहीं लिखा कि कृष्ण अवतार है, प्रत्युत यह लिखा है कि वह घोर के शिष्य थे और यह कृष्ण वह कृष्ण नहीं है, क्योंकि कृष्ण ने घोर आङ्गिरस से उपदेश नहीं लिया, यदि यह कहो कि उसको देवकी का पुत्र लिखा तब भी ठीक नहीं, क्योंकि आज भी अनेक पुरुषों का नाम कृष्ण तथा उनकी माताओं का नाम देवकी है।

अनेक पुरुषों ने अपने पुत्रों का नाम राम, लक्ष्मण, कृष्ण, बलदेव आदि रक्खा हुआ है। क्या इस के यह अर्थ हैं कि वह वही कृष्ण है। सबसे बड़ी बात यह है कि उपनिषद् में नाम आने से अवतार सिद्ध नहीं हो जाते क्योंकि वहाँ अनेक ऋषि-मुनियों के नाम हैं, इसके यह अर्थ नहीं कि वे ऋषि थे।

दर्शन प्रमाणानि

पत्युरसामंजस्यात् ।।२।२।३६

युक्तिशून्य होने से परमात्मा का शरीर नहीं हो सकता।

सम्बन्धानुपपत्तेश्च ।।२।२।३७

यदि परमात्मा को देहधारी मानें तब ठीक नहीं, क्योंकि जो देहधारी होगा वह एकदेशी होगा और एकदेशी होने से सम्पूर्ण संसार के साथ उसका संबंध नहीं हो सकता और संबन्ध-अभाव से संसार की रचना नहीं कर सकता। अतः परमात्मा शरीरधारी नहीं।

अधिष्ठानानुपपत्तेश्च ।।२।२।३८।।

यदि परमात्मा का शरीर मानें तब उसका अधिष्ठान भी मानना पड़ेगा और यह हो नहीं सकता, क्योंकि सृष्टि उत्पत्ति के पूर्व पृथिवी नहीं थी, पुनः वह ठहरा कहाँ ? दूसरी बात यह है कि शरीर बुरे कर्मों का फल भोगने के लिये होता है। जब परमात्मा के ऐसे कर्म ही नहीं, पुनः उसका शरीर कैसे हो सकता है ? जीव को तो परमात्मा बुरे-भले कर्मों का फल देता है, परमात्मा को कौन फल देवेगा !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कखच्चेन्न भोगादिभ्यः २।२।४०।।

शांकरभाष्य

लोक दृष्टचनुसारेण ईश्वरस्यापि केचित् करणानामायतनं कामेन कल्पन्ति एवमपि नोपपद्यते स शरीरत्वे हि सित संसारीवद् भोगत्व प्रसंगादीश्वरस्यापि अनीश्वरत्वं प्रसज्ज्येत ।

यदि लोकदृष्टि के अनुसार परमात्मा के भी शरीर मानें तो ठीक नहीं क्योंकि इन्द्रिय वा शरीर के मानने से यह मानना पड़ेगा कि वह भी हमारी तरह सुख दुःख का भोग करता है। और ऐसा होने से परमात्मा भी हमारी तरह अनीश्वर हो जायेगा। अतः परमात्मा शरीर धारण नहीं करता।

अन्तवत्त्वमसर्वज्ञता वा ।।४१।।

यदि परमात्मा के शरीर मानें तब उसको अन्त वाला मानना पड़ेगा। और अन्त वाला मानने से अल्पज्ञ असर्वज्ञ मानना पड़ेगा। अल्पज्ञ होने से वह परमात्मा नहीं हो सकता।

उत्पत्त्यसम्भवात् ।।४२।।

यदि परमात्मा को देहधारी मानें तब वह सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति प्रलय नहीं कर सकता क्योंकि शरीरधारी के साधन परिमित होते हैं।

न च कर्तुः करणम् २।२।४३

इससे सिद्ध हुआ कि परमात्मा के शरीर इन्द्रियादि साधन नहीं हैं।

योग

क्लेश कर्म विपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।

व्यास भाष्यम्

अविद्यादयः क्लेशाः कुशला कुशलानि कर्माणि ।। तत् फलं विपाकः तदनुग्रणा वासना आशया यो हि अनेन भोगेन अपरामृष्टः स पुरुषविशेष ईश्वरः। कैवल्यं प्राप्तास्तहि संति बहवः केवलिनः ते हि त्रीणि बंधनानि हित्वा कैवल्यं प्राप्ता ईश्वरस्य तत् संबंधी न भूतो न भावी स तु सदैव मुक्तः सदैवेश्वरः ।।

अविद्यादि क्लेश कुशल तथा अकुशल कर्म और उनके अनुकूल वासना कर्मों का फल विपाक जिसको इस भोग का संबंध तीन काल में न हो वह ईश्वर है, इस लक्षण से सिद्ध है कि परमात्मा देहधारी नहीं, क्योंकि देहधारी में ये बातें अवश्य होती हैं।

न्याय

दुःख जन्म प्रवृत्ति दोषमिथ्या ज्ञानाना-
मुत्तरोत्तरापाये तदनंतरापायादपवर्गः।

मिथ्या ज्ञान से दोष, दोष से प्रवृत्ति, प्रवृत्ति से जन्म तथा जन्म से दुःख होता है क्योंकि परमात्मा में मिथ्या ज्ञान का अभाव होने से दोष नहीं, दोष के अभाव से प्रवृत्ति का अभाव, प्रवृत्ति के अभाव से जन्माभाव, जन्माभाव से दुःखाभाव, अतः भगवान् का शरीर नहीं। इस प्रकार सम्पूर्ण दर्शनकार परमात्मा के शरीर का अभाव मानते हैं। उदयनाचार्य इतने बड़े दार्शनिक हुए हैं, वे इस मन्त्र पर लिखते हैं—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् ।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमि जनयन् देव एकः ।

उदयन भाष्यं

अत्र प्रथमेन सर्वज्ञत्वं चक्षुषा दृष्टेरुपलक्षणात् । द्वितीयेन सर्व-वक्तृत्वं मुखेन वागुपलक्षणात् । तृतीयेन सर्वसहकारित्वं बाहुना सहकारि-रत्वोपलक्षणात् । चतुर्थेन व्यापकत्वं पदा व्याप्तेरुपलक्षणात् । पंचमेन धर्माधर्म प्रधान कारणत्वं तौ हि लोकयात्रां वहनाद्वा । षष्ठेन परमाणु रूप प्रधानाधिष्ठेयत्वं ते हि गतिशीलत्वात् पतत्र व्यपदेशा पतंतीति ।

विश्वतः चक्षु के अर्थ सर्वज्ञ, विश्वतः मुख के अर्थ सर्ववक्ता, विश्वतः बाहु के अर्थ हैं सर्व सहकारी, बाहुभ्यां के अर्थ धर्मा-धर्म हैं। इस मन्त्र की व्याख्या में उदयनाचार्य ने सैंकड़ों मन्त्रों की ग्रन्थि को सुलझा दिया है जिनमें रूपकालंकार से ईश्वर में मुखादि अवयव का आरोप किया है।

शंका

लोक वत्तु लीला कैवल्यं वै० २।१।३३
परमात्मा लीला करने के लिये अवतार धारण करता है।

समाधान

शांकरभाष्यम्

यथा चोच्छ्वास प्रश्वासादयोऽनभिसंधाय बाल्यं किंचित् प्रयो-जनं स्वभावादेव संभवति एवमीश्वरस्य इत्यादि ।

जैसे श्वास प्रश्वास स्वभाव से विना प्रयत्न के चलते रहते हैं इसी प्रकार परमात्मा विना प्रयत्न के संसार की रचना करता है, उसको रचना के लिये परिश्रम नहीं करना पड़ता।

शंका

कतिपय लोग इसका यह अर्थ करते हैं कि—

परमात्मा लीला के लिये शरीर धारण करता है, उसका कोई प्रयोजन नहीं होता, जैसे जीवों को लीलामात्र के लिये शरीर देता है।

समाधान

वैषम्य नैर्घृण्ये न सापेक्षत्वात्तथा हि दर्शयति । २।१।३४॥

परमात्मा में विषमता वा घृणा का दोष नहीं आ सकता क्योंकि वह कर्मों की अपेक्षा से जीवों को फल देता है।

इसलिए पौराणिकों का यह सिद्धान्त कि परमात्मा लीला के लिये शरीर धारण करता है इस व्यास के सूत्र से खण्डित हो जाता है।

ईश्वर स्वरूप

न स्थानतोऽपि परस्योभयलिंगं सर्वत्र हि । वे० ३।२।११॥

पृथ्वी आदि की उपाधि से भी ब्रह्म के साकार वा निराकार दो रूप नहीं हो सकते क्योंकि सर्वत्र ब्रह्म को निराकार ही प्रतिपादन किया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शांकर भाष्य

न तावत् स्वत एव परस्य ब्रह्मण उभयलिङ्गमुपपद्यते। न ह्येकं वस्तु स्वत एव रूपादि विशेषोपेतं तद्विपरीतं चेत्यवधारयितुं शक्यं विरोधात्। अस्तु तर्हि स्थानतः पृथिव्यादि उपाधियोगादिति। तदपि नोपपद्यते। न ह्युपाधियोगादप्यन्यादृशस्य वस्तुनोऽन्यादृशः स्वभावः संभवति। नहि स्वच्छः सन् स्फटिकोऽलक्तकाद्युपाधियोगादस्वच्छो भवति इत्यादि।

अतश्चान्यतरपरिग्रहेऽपि समस्तविशेषरहितं निर्विकल्पं ब्रह्म प्रतिपत्तव्यं, तद्विपरीतं सर्वत्र हि ब्रह्मस्वरूपप्रतिपादनपरेषु वाक्येषु अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं क० ३।५।

इत्येवमादिषु अपास्त समस्त विशेषमेव ब्रह्मोपदिश्यते ॥

स्वामी शंकर पूर्वपक्ष के उत्तर में लिखते हैं। स्वतः ही पर ब्रह्म साकार वा निराकार दोनों प्रकार का नहीं हो सकता। एक ही वस्तु रूपादिवाला तथा रूपरहित नहीं हो सकता। विरोध होने से यदि कहाँ कि पृथिवी आदि की उपाधि से वा शरीर के धारण करने से ब्रह्म के साकार निराकार दोनों रूप हो जाएंगे तब भी ठीक नहीं क्योंकि उपाधि के योग से भी अन्य प्रकार की वस्तु अन्य प्रकार के सदृश स्वभाव वाली नहीं हो सकती। स्वच्छ मणि उपाधि के योग से अस्वच्छ नहीं हो सकता। इसलिये सम्पूर्ण भौतिक गुणों से रहित ब्रह्म निराकार है। यही बात सब श्रुतियों में लिखी है कि ब्रह्म शब्दरहित, स्पर्शरहित, रूपरहित तथा अव्यय है।

यहाँ सूत्रकार तथा श्री स्वामी शङ्कर ने उस पौराणिक दल के विचारों पर कुठाराघात कर दिया है जो ब्रह्म को साकार तथा निराकार दोनों प्रकार का मानते हैं।

न भेदादिति चेन्न प्रत्येकमतद्वचनात् ॥११॥

यदि कहो कि ब्रह्म का श्रुतियों में भेद प्रतिपादन ठीक नहीं क्योंकि सब श्रुतियों में ब्रह्म को निराकार प्रतिपादन किया है।

अरूपवदेव हि तत् प्रधानत्वात् ॥१४॥

निश्चय करके ब्रह्म रूपरहित है।

अतएव चोपमा सूर्यकादिवत् ॥१८॥

इसलिये जहाँ कहीं यह कहा है कि चाँद सूर्य उसके नेत्र हैं, पृथिवी पांव हैं इत्यादि मन्त्रों में सब उपमा वा रूपक का वर्णन है उसके यह अर्थ नहीं कि ब्रह्म साकार है।

प्रकृतैतावत्वं हि प्रतिषेधति ततो ब्रवीति च भूयः ॥२२॥

बृहदा० ४३।१। में यह लिखा है कि ब्रह्म के मूर्त तथा अमूर्त दो रूप हैं, पृथिव्यादि मूर्त तथा आकाशादि अमूर्त हैं, जैसे कोई कहे देवदत्त के दो कुत्ते हैं। इसका यह अर्थ नहीं होता कि देवदत्त वा कुत्ते एक ही हैं। इसी प्रकार यहां पृथिवी आदि ब्रह्म के दो मूर्त वा अमूर्त दो पदार्थ बतलाकर अंत में लिखा है नेति-नेति वह ब्रह्म नहीं है।

अनेन सर्वं गतत्वमायामशब्दादिभ्यः ॥३७॥

इसलिये ब्रह्म सर्वव्यापक है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रामायण प्रमाणम्

न मद्विधो दुष्कृत कर्मकारी मन्ये द्वितीयोऽस्ति वसुन्धरायाम् ।
शोकानुशोको हि परम्परायां मामेति भिदन् हृदयं मनश्च ।। वा०अ०स० १०।२

मेरे जैसा कोई दुष्टकर्म करने वाला नहीं है, एक शोक के पश्चात् मुझको दूसरा शोक मिल रहा है।

पूर्वं मया नूनमभीप्सितानि पापानि कर्माण्यसकृत्कृतानि ।
तेषां मयाद्यापतितो विपाको दुःखेन दुःखं यदहं विशामि ।।४।।

निश्चय ही पूर्व जन्म में मैंने बड़े पाप किये थे जिनका मुझको यह फल मिला है कि एक दुःख के पश्चात् मुझको दूसरा दुःख मिल रहा है।

राज्य प्रणाशः स्वजनैर्वियोगः पितुर्विनाशो जननी वियोगः ।
सर्वाणि मे लक्ष्मण शोकवेगमापूरयन्ति प्रविचिंतितानि ।।५।।

उसी पाप कर्म के फल से मेरा राज्य नष्ट हुआ, जननी से वियोग हुआ, स्वजनों से वियोग हुआ, पिता का विनाश हुआ। हे लक्ष्मण, य सब दुःख मेरे शोक को बढ़ा रहे हैं।

सर्वं तु दुःखं मम लक्ष्मणेदं शांतं शरीरे वनमेत्य क्लेशम् ।
सीता वियोगात् पुनरभ्युदीर्णं काष्ठैरिवाग्निः सहसोपदीप्तः । ६ आ० ६३

हे लक्ष्मण, वन में आकर यह सब दुःख शांत हो गया था किन्तु सीता के वियोग से पुनरपि प्रदीप्त हो गया है।

वेद में लिखा है अपापविद्धं परमात्मा में कोई पाप नहीं, योग में आता है जो कर्म वा कर्मफल से रहित है वह परमात्मा है। किन्तु यहाँ लिखा है कि रामचन्द्र को अनेक पापों का फल मिला है, पुनः वह परमेश्वर कैसे हो सकते हैं।

शंका

यह तो भगवान् की लीला है, वास्तव में उनको कोई भी दुःख वा पाप नहीं था।

समाधान

श्री रामचन्द्र जी ने जो स्वयं अपने मुख से यह कहा है कि मैंने प्रथम जन्म में बड़े पाप किये थे जिनका फल मैं इस समय भोग रहा हूँ यह उनका कथन सत्य है वा असत्य ? यदि कहो असत्य है तब वह परमात्मा नहीं हो सकते क्योंकि वेद में सबसे अधिक असत्य भाषण का दण्ड लिखा है। यदि कहो सत्य बोला है तब भी परमात्मा नहीं हो सकते, कारण यह है कि परमात्मा में तीन काल में भी पाप नहीं होते।

तामेव वेलां वक्तव्यं यथा राघव तत्त्वतः ।
वालिनं न निहन्मीति ततो नाहमितो व्रजे ।।

हे राम ! यदि आप मुझको प्रथम ही कह देते कि मैंने वाली को नहीं मारना तब मैं यहाँ से जाता ही नहीं, व्यर्थ ही आपने मुझको भेज कर कष्ट में डाला।

राम का उत्तर

अलंकारेण वेशेण प्रमाणेन गतेन च
त्वं च सुग्रीव वाली च सदृशौ स्थः परस्परम् ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हे सुग्रीव, अलंकार, वेश, भूषा, लम्बाई, चौड़ाई, में तुम दोनों भाई समान थे, मैं ने भ्रम से यह नहीं जाना कि वाली कौन है तथा सुग्रीव कौन सा है। अतः मैंने बाण नहीं चलाया।

स्वरेण वर्चसा चैव प्रेक्षितेन च वानरः।
विक्रमेण च वाक्यैश्च व्यक्ति वा नोपलक्षये ॥

स्वर तेज देखना बल वाक्य सब बातें तुम दोनों में बराबर थीं। इसलिये मैंने नहीं पहचाना कि सुग्रीव कौनसा है तथा वाली कौनसा है।

ततोऽहं रूपसादृश्यान्मोहितो वानरोत्तम।
नोत्सृजामि महावेगं शरं शत्रुनिबर्हणम् ॥

इसलिये हे वानरोत्तम, रूप की समानता से मैं मोह में गिर गया हूँ, इसलिये शत्रु को नाश करने वाले महा वेग बाण को मैंने नहीं छोड़ा।

त्वयि वीर विपन्ने हि अज्ञानाल्लाघवान्मया।
मौढ्यं च मम बाल्यं च ख्यापितं स्यात् कपीश्वर ॥

यदि मैं अज्ञानता से शीघ्र बाण छोड़ देता और आप को कोई कष्ट हो जाता तो मेरी मूर्खता और बालकपन प्रकट होता, अतः मैंने बाण नहीं छोड़ा।

वाल्मीकि रामायण

इस प्रकरण में श्री राम ने स्वयं अपना भ्रम वा अज्ञानता स्वीकार की है, राम मिथ्या बोलने वाले नहीं थे। यदि मिथ्यावादी होते तो उनके वन जाने की क्या आवश्यकता थी ? जब उन्होंने अपने पिता को सच्चा सिद्ध करने के लिये इतने कष्ट उठाये तब वह स्वयं असत्यभाषण कैसे कर सकते थे। अज्ञान वा भ्रम के होने से सिद्ध है कि वे परमात्मा नहीं थे।

पुराण प्रमाणानि

अवतार कारणम्

प्रथम प्रश्न यह है कि परमात्मा अवतार धारण क्यों करता है ? इसके लिए पौराणिक कहा करते हैं कि—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

जब जब धर्म की ग्लानि होती है तब-तब मैं अवतार लेता हूं।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे

साधुओं की रक्षा के लिये, दुष्टों के नाश के लिये तथा धर्म्म को स्थापन करने के लिये मैं युग-युग में अवतार धारण करता हूं।

समाधान

इस श्लोक में तो क्या सम्पूर्ण गीता में कहीं भी अवतार शब्द नहीं आता। श्लोक में सृजामि शब्द आता है जिस के अर्थ हैं विसर्ग, कृष्ण जी महाराज कहते हैं जब-जब धर्म की हानि होती है तब-तब मैं अपने आत्मा का त्याग बलिदान करता हूं। यहां अवतार की गन्ध भी नहीं है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूसरे श्लोक में युगे वा संभवामि क्रिया आती है। युग का अर्थ केवल सतयुग आदि ही नहीं होता किन्तु वेद में युग शब्द अन्य अर्थों में भी आता है। जैसे ऋ० १०।१०१।४ में आता है।

सीरा युंजंति कवयो युगा वितन्वते

यहां युग शब्द हल के साधन में आया है। अत: श्लोक के अर्थ यह हैं—कृष्ण जी कहते हैं—

जब-जब धर्म की हानि का समय आये मैं यह संभावना करता हूं कि दुष्टों का विनाश तथा सज्जनों की रक्षा करूँ।

नीचे हम पुराणों के प्रमाण देकर पौराणिकों का यह दावा खंडित करेंगे कि अवतार धर्म के लिये होता है।

शपामि त्वां दुराचारं किमन्यत् प्रकरोमि ते।
विधुरोऽहंकृतः पाप त्वायाऽहं शाक्ककारणात् ।।दे० ४।१२।५

भृगु ऋषि जिसका पुराणों में बड़ा भारी महत्त्व आता है विष्णु से कहते हैं कि हे दुराचारी, मैं तुझको शाप देता हूं तू ने मेरी स्त्री को मार डाला।

सदा हलपरोऽसि त्वं कीट योनिर्दुराशय।
ये च त्वां सात्त्विकं प्राहुस्ते मूर्खा मुनयः किल ।।
तामसस्त्वं दुराचार प्रत्यक्षं मे जनार्दन ।।७।।

तू दुष्ट सदा हल करने वाला कीड़ों की योनियों में जाने वाला है तथा तू तामस वा दुराचारी है। वे मुनि मूर्ख हैं जो तुम को सतोगुणी कहते हैं।

अवतारा मृत्यु लोके संतु मच्छापसंभवाः।
प्रायो गर्भभवं दुःखं भुंक्ष्व पापाज्जनार्दन ।।८।।

मेरे शाप से मृत्यु लोक में तेरे अवतार होंगे तथा गर्भ से उत्पन्न होने वाले दुःख को तू भोग, यह तुझ को पाप का फल मिला है।

शप्तो हरिस्तु भृगुणा कुपितेन कामं मीनो वभूव कमठः खलु सूकरस्तु। पश्चान्नृसिंह इति यो हलकृद्धरायां तान् सेवतां जननि मृत्युभयं न किं स्यात् ।। दे० स्कं० ५।१६।१८ ।।

जिस विष्णु के भृगु के शाप से मच्छ, कच्छ, वराह, अवतार होते हैं जो नृसिंह अवतार ले कर दुनिया में हल करता उनको अवश्य दुःख होगा। उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध है कि अवतार धर्म की रक्षा के लिये नहीं होते किन्तु भृगु की स्त्री के वध का पाप विष्णु ने किया उस पाप का फल भोगने के लिये उस को वराह आदि की नीच योनियों में जाना पड़ता है।

विष्णु का बयान

यदीच्छा पुरुषो भूत्वा विचरामि महार्णवे।
कच्छपः कौल सिंहश्च वामनश्च युगे युगे ।।दे० १।४।

यदि मैं इस संसार में स्वतन्त्र होता तब कच्छ, मच्छ, वराह, सिंह और वामन आदि क्यों बनता।

न कस्यापि प्रियो लोके तिर्यग् योनिषु संभवः।
नाभवं स्वेच्छया वाम वराहादिषु योनिषु। ५७।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संसार में किसी को भी वराह आदि योनियों में जाना प्रिय नहीं। पुनः क्यों मैं इन योनियों में जाता। यह सब मेरे पापों का फल है।

विहाय लक्ष्म्या सह संविहारं को याति मत्स्यादिषु हीनयोनिषु।
शय्यां च त्यक्त्वा गरुडासनस्य करोति युद्धं विपुलं स्वतंत्रः ॥५८॥

यदि मैं स्वतंत्र होता तब लक्ष्मी के साथ विहार को छोड़कर मछली आदि की हीन योनि में क्यों जाता, तथा सुखशय्या को छोड़कर युद्धादि क्यों करता, यह सब मेरे दुष्कृत का फल है।

पुरापुरस्तेऽज शिरो मदीयं गतं धनुर्ज्या स्खलनात् क्व चापि।
त्वया तदा वाजिशिरो गृहीत्वा संयोजितं शिल्पिवरेण भूयः ॥५९॥

हे ब्रह्मा जी! आपके देखते ही बाण से कटकर मेरा शिर कहीं चला गया था। जब ढूंढ़ने पर भी कहीं नहीं मिला तब आपने घोड़े का शिर मेरे धड़ पर जोड़ दिया।

हयाननोऽहं परिकीर्तितश्च प्रत्यक्षमेतत्तव लोककर्तः।
विडंबनेयं किल लोकमध्ये कथं भवेदात्मपरो यदि स्याम् ॥६०॥

तब मेरा नाम हयानन (घोड़े के मुख वाला) हुआ। हे ब्रह्मा जी! यदि मैं स्वतन्त्र होता तब मेरा यह उपहास संसार में क्यों होता?

नातः परतरं किंचिज्जानामि कमलोद्भव।

हे ब्रह्माजी! मैं इसके आगे कुछ नहीं जानता।

इस विष्णु के बयान में उसकी कितनी हीनता, दीनता वा पराधीनता प्रतीत होती है।

यद्यहं स्याम् स्वतंत्रो वै चिंतयितुं धिया किल।
कुतोऽभवं मत्स्यवपुः कच्छपो वा महार्णवे ॥३६॥
तिर्यग् योनिषु को भोगः का कीर्तिः किं सुखं पुनः।
किं पुण्यं किं फलं तत्र क्षुद्रयोनिं गतस्य मे ॥ दे० ।४।२४।३७॥

जरा विचार कर देखो यदि मैं स्वतंत्र होता तब मच्छ, कच्छ, वराह आदि की योनियों में क्यों जाता?

इन नीच योनियों में क्या सुख पुण्य भोग फल आदि कुछ है? सिवाय क्लेश के और कुछ भी नहीं।

कौलो वाऽथ सिंहो वा वामनो वाऽभवं कुतः।
जमदग्निसुतः कस्मात् संभवेयं पितामह ॥३८॥
नृशंसं वा कथं कर्म कृतवानस्मि भूतले।
क्षत्रजैस्तु ह्रदान् सर्वान् पूरयेयम् कथं पुनः ॥३९॥
क्षत्रियान् हतवानस्मि निर्दयो गर्भगानपि ॥४०॥

यदि मैं स्वतंत्र होता तब वराह आदि योनियों में क्यों जाता तथा वामनादि अवतार में छल क्यों करता वा परशुराम बनकर क्षत्रियों के नाश रूपी कुकर्म को क्यों करता?

भृगुपत्नी शिरश्छेदात् भगवान् हरिरच्युत, ब्रह्मशापात् पशोर्योनौ
संजातः मकरादिषु। विष्णुश्च वामनो भूत्वा याचनार्थं बलेर्गृहे ॥दे० ६।७।३५॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गतः किमतः दुःखं प्राप्नोति दुष्कृतो नरः ।
रामोपि वनवासेषु सीताविरहजं वहु ॥३६॥
दुःखं च प्राप्तवान् घोरं भृगुशापेन भारत ।

भृगु की पत्नी का सिर काटने से पशु आदि की योनि में विष्णु जाता है इससे वढ़ करके पापी मनुष्य को और क्या दुःख मिल सकता है ?

पौराणिको ! कहो तुम तो कहते हो कि धर्म की रक्षा के लिए भगवान् स्वयं अवतार लेता है। किंतु यहां तो लिखा है कि विष्णु का मच्छ आदि नीच योनियों में जाना उसके पाप का फल है।

कर्म-फल

अवश्यमेव कर्माणि भोक्तव्यानीति निश्चयः ।
देवैर्मनुष्यैरसुरैर्यक्षगंधर्वकिन्नरैः ॥ दे० ६।१०।१५॥
कर्मैव हि महाराज देहारंभस्य कारणम् ॥१६॥

कर्म क्षये जन्मनाशः प्राणिनां नात्र संशयः । ब्रह्मा विष्णुस्तथा रुद्रः रुद्राद्याश्च सुरास्तथा । दानवा यक्ष गन्धर्वाः सर्वे कर्मवशाः किल ॥१८॥ अन्यथा देह सम्बन्धं कथं भवति भूपते ॥१९॥ पापं करोति मनुजस्तथा देवादयोऽपि ते । तथा नारायणो राजन् नरश्च धर्मजावुभौ ॥३१॥ वासुदेवोऽपि संजातः कारागारेऽतिसङ्कटे । नीतोऽसौ वसुदेवेन नन्दगोपस्य गोकुलम् ॥३५॥ जगाम द्वारवत्यां च म्लेच्छराजभयात् तदा । एवं ते कथिता राजन् कर्मणो गहना गतिः । वासुदेवोऽपि व्याधस्य बाणेन निधनं गतः ॥४१॥

जो स्वकृत कर्म का फल होता है वह अवश्यमेव भोगना पड़ता है। मनुष्य देवता आदि सब कर्म के फल को भोगते हैं। क्योंकि देह का कारण कर्म ही है, बिना कर्म के देह नहीं मिल सकता। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कृष्ण आदि सब पाप करते हैं उन्हीं पापों का फल उनको मिलता है। उसी पाप कर्म के फल से कृष्ण को कारागार का फल भोगना पड़ा तथा वे जरासंध के डर के मारे द्वारिका में भाग गये और उसी दुष्कर्म के फल से कृष्ण की व्याध के बाण से मृत्यु हुई ॥

पौराणिको ! कहो यहाँ तो तुम्हारे अवतारवाद को चौपट कर दिया। यहाँ तो यह सिद्ध कर दिया कि विष्णु, रुद्र, नर, नारायण आदि सब पाप करते हैं। उसी पाप को भोगने के लिए विष्णु अवतार लेता है। बतलाओ, अब तुम्हारी धर्म की रक्षा तथा भगवान् की लीला कहाँ गई ?

चतुर्गेहं च मे स्वामिन् द्यूतं मद्यं सुवर्णकम् ।
स्त्रीहास्यं चाग्निवंश्यैश्च क्षत्रियैश्च विनाशितम् ॥१७॥
मम पुत्राश्च स्मृता म्लेच्छा आर्यधर्मत्वमागताः ॥भ०प्र० खं०३॥

कलियुग कहता है "महाराज ! इस समय कोई मांस नहीं खाता, शराव नहीं पीता, जुआ नहीं खेलता। सब म्लेच्छ जो मेरे पुत्र थे आर्य-धर्मी बन गये।

त्यक्तदेहस्त्यक्तकुलस्त्यक्तराष्ट्रो जनार्दन ।
त्वत्पादाम्बुजमादाय स्थितोऽहं शरणं त्वयि ।

जिसका देह, कुल, राज, राष्ट्र, सर्वस्व नष्ट हो गया है, वह मैं आपकी शरण में आता हूं, मेरी रक्षा करो।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इति श्रुत्वा स भगवान् कृष्णः प्राह विहस्य तम् ।
भो कले तव रक्षार्थं जनिष्येऽहं महावतीम् ।।१६।।
ममांशो भूमिमासाद्य क्षयिष्यति महाबलान् ।
म्लेच्छवंशस्य भूपालान् स्थापयिष्यति भूतले ।।२०।।

भगवान् हँसकर बोले, "कलियुग, तुम चिन्ता मत करो, तुम्हारी रक्षा के लिये मैं महावती को उत्पन्न करूंगा तथा अवतार ले कर आर्य राजाओं को संसार से मिटाऊंगा तथा मलेच्छ वंश के राजाओं का संसार में राज्य स्थापन करूंगा ।

त्वया दत्तो हि मे नाथ कलि विनाशनाधिकारं । कृतं नाथ सत्य सत्य प्रियक्षम । २३ अ० २४ । प्र० भ० ।

बलि कहने लगा "महाराज ! आप ने मुझ को वरदान दिया था कि कलियुग में सत्य का राज्य नहीं होगा अब आप अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कीजिये ।"

इति श्रुत्वा बलेर्वाक्यं भगवान् वामनो हरिः ।
त्वांशान्महीतले प्राप्तो दैत्यपक्षविवर्धनः ।।२४।।

ऐसा बलि का वचन सुनकर भगवान् वामन हरि ने राक्षसों का पक्ष बढ़ाने के लिये अवतार धारण किया ।

उपर्युक्त प्रमाणों से सिद्ध है कि भगवान् ने आर्य धर्म को मिटाने के लिए तथा राक्षसों को पुष्ट करने के लिये द्यूत, मद्य, मांस, व्यभिचार का प्रचार करने के लिये अवतार लिया है । कहिये पोप जी ! अवतार धर्म की रक्षा के लिये होता है । यह आप की वात खंडित हुई या नहीं ?

महायानाभिमत्तानां वीराणां दुष्टचेतसां ।
कृष्णमायाविमूढानां संघर्षः सुमहानभूत् ।१३।
भा० ११ । ३० ।।

कृष्ण जी की माया से विमूढ़ यादवों का परस्पर घमासान युद्ध हुआ ।

अन्योऽन्यमासाद्य मदांधकारिणो जघ्नुर्मुकुन्देन विमोहिता खलाः ।
१७ स्कन्ध ११ ।३०।।

श्री कृष्ण ने अपनी माया से मोह में डाल दिया है ऐसे यादव परस्पर लड़ कर मर गये ।

कहिए ! क्या यही १६ कलापूर्ण कृष्णावतार है । जिसने रात दिन उस की संगत में रहने वाले यादवों को लड़ा कर मार दिया । क्या ये भी सब राक्षस थे ?

बुद्ध

देवद्विषां निगमवर्त्मनि निष्ठितानां पूर्भिर्मयेन विहिताभिरदृष्टपूर्त्तिः।
लोकांधतामतिविमोहमतिप्रलोभं वेशं विधाय बहुभाष्यत औपधर्म्यम् ।
भा० २ । ७ । ३७

राक्षसों को वेदमार्ग पर चलते हुए देख कर भगवान् ने अवतार लिया तथा उनको ऐसे उपदेश दिये जिससे वे वेदमार्ग से भ्रष्ट हो गये ।

शतकोटिमिता दैत्या धर्मात्मानो निवासिनः ।
गृहीत्वा यज्ञभागं च देवतुल्या बभूविरे ।।२२।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मयपुत्रः स्मृतो मायी तपः घोरं चकार ह ।
पदकेन स्थितः सूर्ये सहस्राब्दं प्रयत्नतः ।।१८।।
इति श्रुत्वा वचस्तेषां भगवान् मधुसूदनः ।
दृष्ट्वा संस्कृत वार्त्तायां दैत्यान् धर्मपरायणान् ।।२६।।
बौद्धरूपस्त्वयं जातः कलौ प्राप्ते भयानके ।
वेदधर्मपरान् विप्रान् मोहयामास वीयवान् ।
निर्वेदा कर्मरहितास्त्रिवर्णा तामसांतरे ।
भ०प्र०अ०१२खं०४ पृ०३४६।।
तस्मिन्नेव काले तु क्लिना संस्मृतो हरिः ।
कलेर्वै प्रथमे चरणे वेदमार्गे विनाशितः ।।३६।।

सौ करोड़ दैत्य, बड़े धर्मात्मा, वेद पढ़ने वाले, तपस्वी देवों के तुल्य, संस्कृत पढ़ने वाले, वेद मार्गावलम्बी, धर्म परायण थे। भगवान् ने बुद्ध का अवतार लेकर इन सबको वेद के विरुद्ध उपदेश देकर नास्तिक किया तथा वेदमार्ग का भली प्रकार नाश किया।

पौराणिको ! कहो अवतार का काम संसार को सन्मार्ग पर लाना है या संसार को असत्य नास्तिकता का उपदेश देकर धर्मभ्रष्ट करना है। वेद में असत्य बोलने का सब से अधिक पाप लिखा है। क्या इसी काम के लिये तुम्हारे कहने के अनुसार बुद्ध ने अवतार लिया था ? क्या जिनको बुद्ध ने उपदेश दिया वे मनुष्य नहीं हैं ? तुम्हारे कहने के अनुसार राक्षस कोई विलक्षण जन्तु हैं, अब भी तो संसार में बौद्धों की सबसे अधिक संख्या है, वे सब हम जैसे आदमी हैं, क्या वे सुमार्ग पर नहीं आ सकते और पुराण के लेख से तो सिद्ध है कि वे सब धर्मात्मा, तपस्वी, वेदानुयायी थे, जिन को तुम्हारे बुद्धावतार ने कपट से विपरीत उपदेश देकर असत्यमार्गी वेद-विरोधी बनाया।

असत्यवादी को दण्ड

न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम् । हंति रक्षो हन्त्यासद्वदन्तमुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते । १३ । यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह । इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेन विश्वस्य जन्तोरधमस्पदीष्ट ।। १६ ऋ० ७ । १०४ ।।

परमात्मा क्षत्रिय राजा आदि असत्य बोलने वाले किसी को भी नहीं छोड़ता, असत्यवादी सब को नष्ट कर देता है।

जो किसी धर्मात्मा को असत्य बोलकर पापी कहता है तथा स्वयं पापी होता हुआ अपने को पवित्र कहता है, परमात्मा वा राजा उस को नष्ट करे तथा वह सब के पांवों के नीचे रहे। पौराणिको ! कहो, क्या यह वेद का दण्ड तुम्हारे असत्यवादी बुद्धावतार को नहीं मिलना चाहिये ?

अकामो धीरोऽमृतः स्वयम्भू रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः ।
तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम् ।।अथर्व०१०।८ ।४४।।

भगवान् अकाम, काम रहित, धीर, अमृत, स्वयंभू, नित्यतृप्त और पूर्ण है। उसीको जान कर मनुष्य मृत्यु से बच सकता है। इस मन्त्र में परमात्मा को अकाम कहा है किन्तु पुराण देखिये—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कामी

मत्स्य. कूर्मो वराहश्च नरसिंहश्च वामनः ।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्ध कल्की हरिर्दश ।।१।।

योगेन्द्राणां प्रधानश्च संसारभयनाशनः ।
लक्ष्मीमुरसि संधत्ते मन्मथेन वशीकृतः ।।३।।
शि० धर्म० अ० ६ ।।

जो विष्णु, भगवान् मच्छ, कच्छ, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम तथा राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्की १० अवतार धारण करता है, वह भी काम के वश में होकर लक्ष्मी को उर से लगाए रखता है ।

भ्रातृणां दैत्यमुख्यानां हतानां दारुणे युधि ।
स्त्रियो हित्वा तु पाताले चिक्रीड च मुमोद च ।।६१।।

त्रेतायुगे राम रूपे विष्णुः संप्राप्य जानकीम् ।
नो तृप्तः स्त्री विलासानां वित्तस्य च सुतस्य च ।६२।।

रेतः संप्रेषणाच्चापि प्रोषितस्य स्त्रियामपि ।
तस्मात् कलियुगे भूमौ गृहीत्वा जन्म केशवः ।।६३।।

वसुदेवस्य देवक्यां मथुरायां महाबलः ।
बालस्तु गोपकन्याभिर्वने क्रीडां चकार सः ।।६४।।

दश लक्षाणि पुत्राणां गोपालानां ससर्ज ह ।
यस्तु यौवनाक्रांतो रुक्मिणीं प्रददर्श ह ।।६५।।

विवाहयित्वा पुत्रांश्च प्रद्युम्नाद्यांश्च निर्ममे ।
तथापि नरकं दैत्यं प्राग्ज्योतिषमतिबलात् ।।६६।।

हृत्वा स्त्रीणां सहस्राणि षोडशैव जहार सः ।
तासां रतिफलं भुक्त्वा पुत्राणां नवतिं तथा ।।६७।।

सहस्राणि ससर्जाशु मत्स्ये चांदं महाद्भुतं ।
स्त्रीणां तथापि नो तृप्तो दिव्यानां तु रतेर्यदा ।६८।

तदा राधा स्त्रियं कांचिन्निशि धैर्यादधर्षयत् ।
तथापि परनारीणां लम्पटो नित्यमेव हि ।
शि०ध०अ० ६।।

भगवान् विष्णु राक्षसों को मार कर उनकी स्त्रियों को पाताल में ले गया तथा उन से क्रीडा वा आमोद-प्रमोद किया ।

त्रेतायुग में रामावतार लेकर जानकी से विवाह किया, किंतु स्त्रियों के विलास से तृप्त नहीं हुआ और वन में जाने के कारण गर्भाधान यथेष्ट नहीं कर सके । इसलिये कलियुग में कृष्ण का अवतार धारण किया और बचपन में गोपियों से क्रीडा करके दस लाख लड़के उत्पन्न किये तब भी तृप्त न हुए, तब युवा होकर रुक्मिणी से विवाह करके प्रद्युम्न आदि संतानें उत्पन्न कीं, पुनरपि तृप्त न हुए तब नरक नाम के राक्षस को मार कर १६ हजार स्त्रियें लाये तथा ६० हजार पुत्र उत्पन्न किये, फिर भी तृप्त नहीं हुए तब राधा नाम की एक स्त्री को पकड़ लाये । इतना होने पर भी भगवान् परनारियों के लंपट हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इति तव कुसुमेषोर्दिव्य माहात्म्यमुक्तं ललितपद वचोभिः श्रोत्रपैर्मनुष्यैः ।
तदनुशृणु रहस्यं मन्मथस्य प्रभावं सक लजनमनांसि क्षोभितुं यरतु जातः ॥

यह कामदेव का दिव्य माहात्म्य है जिसको सुन्दर पदों के द्वारा वर्णन किया है। पुनरपि कामदेव के प्रभाव को सुनो जो सम्पूर्ण जनसमुदाय के मनों में क्षोभ उत्पन्न करने के लिये प्रादुर्भूत हुआ है।

कहो पौराणिक बंधुओ ! क्या इन प्रमाणों के होते हुए भी यह कहोगे कि अवतार धर्म की रक्षा के लिये होता है। यहाँ कितने स्पष्ट शब्दों में इस बात का वर्णन किया है कि राम, कृष्णादि विष्णु के सब अवतार कामेच्छा की पूर्ति के लिये तथा संतान उत्पन्न करने के लिये होते हैं।

राम का बयान

असहायो ह्यपाथेयो भीषणे निर्जने वने
कुर्वन्नाखेटकं तत्राविचरं विगतत्रपः ॥४२॥

न ज्ञातवान् मृगं तत्र मायया विहितस्तदा ।
वारितोऽपि मयात्यर्थं मोहितः प्राकृतैर्गुणैः ॥४४॥

अन्यायेन हतो वाली शापाच्चैव निवारितः ॥४७॥

बद्धोऽहं नागपाशैश्च लक्ष्मणश्च ममानुजः ।
विसंज्ञौ पतितौ दृष्ट्वा वानरा विस्मयं गताः ।४८।

चिंता मे महती जाता दैवं किंवा करिष्यति ॥४६॥

वराटिकाऽपि पित्रा मे न दत्ता वन निर्गमे ।
पदातिरसहायोऽहं धनहीनश्च निर्गतः ॥५२॥

एवं रामावतारेऽपि दुःखं प्राप्तं निरन्तरम् ।
परतन्त्रेण मे नूनं स्वतन्त्रः को भवेत्तदा ॥५८॥

परतन्त्रोऽस्म्यहं नूनं पद्मयोने निशाम ।
तथा त्वमपि रुद्रश्च सर्वे चान्ये सुरोत्तमाः । दे० ४।२४॥

रामावतार में असहाय अपाथेय शिकार करता हुआ निर्लज्ज होकर मैं विचरता था। मैंने यह भी नहीं जाना कि यह मारीच है या हिरण है। अन्याय से मैंने वाली की हत्या की, मैं तथा लक्ष्मण दोनों नाग-पाश से बंध गये। मुझको बड़ी चिंता हो गई कि दैव क्या करेगा, मुझको पिता ने एक कौड़ी भी सहायता के लिए नहीं दी, धन-हीन दीन-हीन मैं जंगल में गया। इस प्रकार रामावतार में मैं ने अनेक कष्ट भोगे, यदि मैं स्वतन्त्र होता तब इतने दुःख क्यों भोगता, इसी प्रकार शिव आदि कोई भी स्वतन्त्र नहीं हैं।

इन प्रमाणों में श्री राम ने स्वयं अपने दुःखों का वर्णन किया है, तथा यह स्वीकार किया है कि मैं स्वतन्त्र होता तब इतने दुःख क्यों भोगता ? पौराणिको, क्या अब भी यह ही कहोगे कि परमात्मा के अवतार लीलार्थ होते हैं। उनको दुःखादि कुछ भी नहीं होता, क्या यह तुम्हारा कथन मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त वाली कहावत को चरितार्थ नहीं करता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिवादि की दुर्गति

कस्माद्विगर्हितं रूपं प्राप्तवान् सह भार्यया ।
योनिर्लिंग स्वरूपं च कथं स्यात् सुमहात्मनः ।।५।।

पञ्चवक्त्रश्चतुर्बाहुः शूलपाणिस्त्रिलोचनः ।
कथं विगर्हितं रूपं प्राप्तवान् द्विजपुङ्गव ।।
प०अ० २८२ । उ०

दिलीप बोला कि वसिष्ठ जी महाराज, शिवजी ने अपनी भार्या पार्वती सहित योनि लिंग स्वरूप यह निंदनीय स्वरूप क्यों बनाया,पांच मुख,चार हाथ,हाथ में त्रिशूल, तीन आंखें, ऐसा निन्दनीय रूप इन्होंने क्यों बनाया । इस बात को सुनकर वसिष्ठ जी बोले कि एक समय स्वायम्भुव मनु सब ऋषियों को साथ लेकर मन्दर पर्वत पर गये ।

तस्मिन् समागताः सर्वे मुनयः संशितव्रताः ।
नानाशास्त्रविदः श्रेष्ठाः बाल सूर्यानलप्रभाः ।९।।

सर्ववेदविदो विप्राः सर्वे धर्मपरायणाः ।
वर्ममनि महासत्रे मुनयः क्षीणकल्मषाः ।
अन्वेष्टुं देवतातत्त्वं मिथः प्रोचुस्तपोधनाः ।।१०।।

जो मुनि उस सत्र में आए, वे वेद-वेदांग के जानने वाले, सब शास्त्रों में निपुण, श्रेष्ठ, प्रातःकाल के सूर्य के समान, तेजस्वी, धर्मपरायण थे ।

तेषां समुपविष्टानां इति वादो महानभूत् ।
रुद्रमेकमिति प्रोचुः केचिदत्र महर्षयः ।।१३।।

ब्रह्मैव पूज्य इत्यन्ये वदन्ति मुनिसत्तमाः ।
सूर्य एवात्मनां पूज्य इत्यन्ये प्राहुरर्चकाः ।।१४।।

उन उब मुनियों में विवाद आरम्भ हो गया । कोई कहने लगा शिव की पूजा करनी चाहिये, अपर कहने लगे सूर्य की पूजा करनी चाहिये, इतर कहने लगे ब्रह्मा की पूजा करनी चाहिये, कतिपय कहने लगे विष्णु की पूजा होनी चाहिये, तब मनु बोले—

शुद्धः सत्त्वमयो योऽसौ कल्याणगुणवान् प्रभुः ।
पुण्डरीकेक्षणः श्रीमान् श्रीपतिः पुरुषोत्तमः ।।१७।।

विप्राणां वेदविदुषां एक एवार्चितः प्रभुः ।
विप्राणां नेतरे पूज्याः रजस्तमोविमिश्रिताः ।।१८।।

जो शुद्ध सत्त्व वाला, कल्याण गुण वाला, विष्णु है वही पूजनीय है, अन्य किसी भी देवता की पूजा नहीं करनी चाहिये । तब सब महर्षियों ने यह निर्णय किया कि हम सबमें श्रेष्ठ भृगु तपोनिधि वा श्रेष्ठ है । अतः उनको सब देवताओं के पास जाकर, उनके हालात देखकर, अपना निर्णय देना चाहिये कि कौन सा देव पूजनीय है । तब भृगु कैलाश गये और उन्होंने निर्णय दिया—

नारीसङ्गममग्नोऽसौ यस्मान्मामवमन्यते ।
योनिर्लिंगस्वरूपं वै तस्मात्तस्य भविष्यति ।।३१।।

नारी के सङ्गम में लगा हुआ शिव मेरी परवाह नहीं करता इसलिये इसका स्वरूप योनिलिङ्ग का होगा ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रुद्र भक्ताश्च ये लोके भस्मलिंगास्थिधारिणः ।
ते पाषण्डत्वमापन्नाः वेदबाह्या भवन्तु वै ॥३५॥

जो इस संसार में शिवजी के भक्त हैं तथा लिङ्ग, अस्थि वा भस्म धारण करते हैं वे पाखण्डी वेद विरोधी हैं।

येऽर्चयन्ति सुरानन्यांस्त्वां विना पुरुषोत्तम ।
ते पाषण्डत्वमापन्नाः सर्वलोकविगर्हिताः ।५६।

विप्राणां वेदविदुषां त्वमेवेज्यो जनार्दन ।
नान्यः कश्चित् सुराणां च पूजनीयः कदाचन ।५७॥

अचर्च्याः ब्रह्मरुद्राद्याः रजस्तमोविमिश्रिताः ।
त्वं शुद्धसत्त्वगुणवान् पूजनीयोऽग्रजन्मनाम् ॥५८॥

जो विष्णु की पूजा छोड़ कर अन्य रुद्रादि देवताओं की पूजा करते हैं वे सब संसार में निन्दनीय हैं।

ब्रह्मा शिवादि की कभी भी पूजा नहीं करनी चाहिये।

इतरेषां तु देवानामन्नं पुष्पं जलं तथा ।
अस्पृश्यं तु भवेत् सर्वं निर्माल्यं सुरया समम् ॥६१॥

नान्यं देवं तु वीक्षेत ब्राह्मणो न च पूजयेत् ।
नान्यं प्रसादं भुंजीत नान्यस्यायतनं विशेत् ॥६३॥

ब्रह्मा, शिव, हनुमान्, देवी आदि सब देवताओं का अन्न, पुष्प, जल आदि सब अस्पृश्य हैं। सिवाय विष्णु के किसी देवता को देखना पाप है तथा उनके मन्दिर में जाना पाप है तथा उनका प्रसाद खाना पाप है।

इतरेषां तु देवानां निर्माल्यं गर्हितं भवेत् ।
सकृदेव हि योऽश्नाति ब्राह्मणो ज्ञानदुर्बलः ॥६७॥

निर्माल्यं शङ्करादीनां स चण्डालो भवेद्ध्रुवम् ।
कल्पकोटि सहस्राणि पच्यते नरकाग्निना ॥६८॥

जो मनुष्य शिव देवी आदि किसी देवता का निर्माल्य खायेगा वह चांडाल है, करोड़ों कल्पों तक नरक में ही रहता है।

निर्माल्यं भो द्विजश्रेष्ठाः रुद्रादीनां दिवौकसाम् ।
रक्षोयक्ष पिशाचान्नं मद्यमांससमं स्मृतम् ॥६६॥

तद् ब्राह्मणैर्न भोक्तव्यं देवानां भुञ्जितं हविः ।

ब्राह्मणों को शिव आदि देवताओं का भोग कभी भी नहीं खाना चाहिये, वह मद्य-मांस के समान है।

यस्तु नारायणं देवं ब्रह्मरुद्रादि दैवतैः ।
समत्वेनैव वीक्षेत स पाखण्डी भवेत् सदा ॥६॥

किमत्र बहुनोक्तेन ब्राह्मणाः येप्यवैष्णवाः ।
न स्प्रष्टव्या न वक्तव्या न द्रष्टव्याः कदाचन ॥११॥

अ० २६३ । ३०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो शिवादि देवताओं को विष्णु के समान देखेगा वह पाखण्डी है। अधिक क्या कहें जो विष्णु के सिवाय किसी भी देवता को मानेगा उस से बात करना, उस को छूना व उस को देखना पाप है।

भवव्रतधरा ये च ये च तान् समनुव्रताः।
पाषण्डिनस्ते भवन्तु सच्छास्त्रपरिपन्थिनः ॥

भा० ४। २।२८॥

नष्टशौचाः मूढधियो जटाभस्मास्थिधारिणः।
विशन्तु शिवदीक्षायां यत्र दैवं सुरासवम् ॥२९॥

जो शिवजी का व्रत धारण करते हैं तथा उन के पीछे चलने वाले हैं, वे पाखण्डी तथा सत्य शास्त्र के विरोधी हैं। अशुद्ध, मूर्ख, लिङ्ग, जटा, भस्म वा हड्डियों के धारण करने वाले हैं जहाँ मद्यादि पान किया जाता है।

विष्णु की दुर्गति

उपर्युक्त पुराण में शिवजी की घोर निन्दा की गई है। अब जरा विष्णु की अवस्था भी देखिये।

ये निन्दन्ति महेश्वरं त्रिजगतामाधारभूतं हरिं
ये निन्दन्ति त्रिपुण्ड्र धारणकरं दोषस्तु तद्दर्शने।
ते वै सङ्करसूकरासुरखरश्वक्रोष्टुकीटोपमाः
जाता एव भवन्ति पापपरमास्ते नारकाः केवलम् ॥ ४६ ॥

जो शिव की निंदा करते हैं जैसे कि पद्मपुराण में की गई तथा जो शिवजी के तिलक तिर्यक् पुण्ड्र की निन्दा करते हैं, वे वर्ण सङ्कर, सूअर, राक्षस, गधा, कुत्ता, गीदड़ के समान हैं, वे परम पापी तथा नरकी हैं।

तत् सम्भाषणतो भवेद्धि नरकं निस्तारवानास्थितम्।
ये भस्मादि विधारणं हि पुरुषं निन्दन्ति मन्दा हि ते।४७।

शि० वि० अ० ॥२४॥

उनके साथ भाषण से नरक मिलता है। जो भस्मधारी पुरुषों की निन्दा करते हैं वे मन्द हैं।

शिव सामान्य वक्तारं शिव सामान्य दर्शितम्।
दृष्ट्वा स्नायात् सचैलः सन् शिवसामान्य सङ्गिनम् ।७६॥
महेशस्यैव दासोऽयं विष्णुस्तेनानुकम्पितः ॥५॥
श्रुतिस्मृतिपुराणानां सिद्धान्तोऽयं यथार्थतः।
इन्द्रोपेन्द्रादयः सर्वे महेशस्यैव किङ्कराः ॥६॥
तेन तुल्यो यदा विष्णुर्ब्रह्मा वा यदि गद्यते।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥१७॥

सौर पुराण अ० ॥४०॥

जो मनुष्य विष्णु को शिव के समान देखता है वा शिव के समान ब्रह्मादि को बतलाता है, वह पापी है। उस को देख कर कपड़ों सहित स्नान करना चाहिये। विष्णु शिवजी का दास है। इन्द्रादि सब देवता शिवजी के नौकर हैं। जो मनुष्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विष्णु ब्रह्मादि को शिवजी के समान कहता है, वह ६० हजार वर्ष तक टट्टी का कीड़ा बनेगा।

शिवलिंगं समुत्सृज्य यजन्ते चान्यदेवताः।
स नृपः सह देशेन रौरवं नरकं व्रजेत् ॥ ३५ ॥
शिवभक्तो न यो राजा भक्तोऽन्येषु सुरेषु च।
स्वपतिं युवतिस्त्यक्त्वा यथा जारेषु राजते ॥ ३६॥
लिं० उत्तर भाग ॥अ० ११॥

शिव लिङ्ग की पूजा छोड़ कर जो अन्य विष्णु, ब्रह्मा, हनुमान् देवी आदि देवताओं की पूजा करते हैं वह राजा अपने देश सहित रौरव नरक में जाता है। जो राजा शिवजी का भक्त नहीं है तथा दूसरे देवताओं का भक्त है। वह ऐसा दुष्ट है जैसे कोई युवती अपने पति को छोड़ कर दूसरे जार पुरुष के साथ विषय करने से होती है।

चिह्न-निन्दा

भिन्न-भिन्न पुराणों में केवल देवताओं की निन्दा नहीं आती किन्तु अलग अलग देवताओं के जो भिन्न तिलकादि चिह्न हैं उनकी परस्पर घोर निन्दा आती है।

ये कंठ लग्न तुलसी नलिनाक्षमाला ये बाहुमूल परिचिह्नित-
शङ्खचक्राः। येषां ललाट पटले लसदूर्ध्व पुंड्राः ते वैष्णवाः
भुवनमाशु पवित्रयंति ॥ पद्म० उ० अ० २५३ ॥

जिसके गले में तुलसी की माला है, जिसने अपनी भुजा के मूल में छाप गरम करके अपने को जला दिया है, जिसने अपने ललाट में ऊर्ध्व पूण्ड्र तिलक लगाया है, वह वैष्णव है। अर्थात् विष्णु को मानने वाले वैष्णव के तीन चिह्न हैं। पहला तुलसी की माला धारण करना, दूसरा अपने आप को सांड की तरह जला लेना, तीसरा माथे में ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक लगाना। प० अ० १५२।

न तस्य किंचिदश्नीयादपि क्रतुसहस्रिणः।
सर्वं वेदविदो वापि सर्वशास्त्रविशारदः ॥४२॥
अधृत्वा विधिना चक्रं ब्राह्मणः पतितो भवेत्।
ऊर्ध्वपुण्ड्रविहीनस्तु शङ्खचक्र विवर्जितः ॥४३॥
तं गर्दभे समारोप्य बहिः कुर्यात् स्वपत्तनात् ॥४४॥
यच्छरीरं मनुष्याणामूर्ध्व पुण्ड्रविवर्जितम्।
द्रष्टव्यं नैव तत् किंचित् श्मशान सदृशं भवेत् ॥१२॥
ऊर्ध्व पुण्ड्र विहीनस्तु संध्याकर्मादिकं चरेत्।
तत् सर्वं राक्षसैर्नीतं नरकं चाधिगच्छति ॥१३॥
ब्राह्मणः कुलजो विद्वान् भस्मधारी भवेद्यदि।
वर्जयेत्तादृशं देवि मद्योच्छिष्टं घटं यथा ॥१६॥
त्रिपुण्ड्र शूद्र कल्पानां शूद्राणां च विधिं तथा।
त्रिपुण्ड्र धारणाद्विप्रः पतितः स्यान्न संशयः ॥२२॥
पद्म० उ० अ०२५३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो हजार यज्ञ करे, सम्पूर्ण वेद या सब शास्त्रों के जानने वाला हो तथापि जो ऊर्ध्व पुण्ड्र धारण नहीं करता तथा विष्णु के सिवाय दूसरे देवताओं को मानता है, उसको गधे पर चढ़ा कर पत्तन से बाहिर निकाल देना चाहिए। जिस मनुष्य के मस्तक में ऊर्ध्व पुण्ड्र न हो उसको कभी भी नहीं देखना चाहिए। यह माथा श्मशान के सदृश है। जो मनुष्य ऊर्ध्वपुंड्र के बिना सन्ध्यादि करता है वह नरक में जायेगा। यदि कुलीन ब्राह्मण माथे में भस्म लगायेगा जैसे कि शिव के भक्त लगाते हैं ऐसे ब्राह्मण का ऐसे ही दर्शन नहीं करना चाहिए जैसे कि शराब से भरे घड़े का। जो कोई ब्राह्मण त्रिपुंड्र शिव के तिलक को धारण करेगा वह पतित होगा।

भस्म महिमा

दे० ११। १५। १५ में लिखा है—

न यस्य सहजा प्रीतिर्मणिवद् भस्मसंग्रहे ।
स चांडाल इति ज्ञेयो जन्मजन्मांतरे ध्रुवम्॥

जिस की भस्म के संग्रह में प्रीति नहीं है वह जन्मजन्मांतर में निश्चय से चांडाल होगा।

पौराणिक बंधुओ ! बतलाओ क्या अब भी अवतार का दम भरोगे। प्रथम यह तो निश्चय कर लो कि तुम्हारा परमात्मा कौन सा है। पद्मपुराण में सिवाय विष्णु के सब का घोर खंडन किया है तथा शिवादि के मानने वालों को नरक में भेजने का प्रमाणपत्र दे दिया है। शिव-लिंग तथा सौर पुराण में सिवाय शिव जी के जो दूसरों को मानेगा उस को सूकर, खर, गीदड़ आदि की पदवी देते हुए अन्त में विष्ठा तक का कीड़ा बना डाला। जब ये शिव जी आदि सब परमात्मा के अवतार हैं तब ऐसे दंड क्यों लिखे हैं। अतः यह सिद्ध है कि इन में से कोई भी परमात्मा नहीं है।

विष्णु आदि कर्म फल भोक्ता

अवश्यमेव भोक्तव्यं कालेनापादितं च यत् ।
शुभं वाप्यशुभं वापि दैवं कोऽतिक्रमेत् पुनः ॥दे० १।५॥
देहवान् सुखदुःखानां भोक्ता नैवात्र संशयः ।
यथा कालवशात् कृत्तं शिरो मे शंभुना पुरा ॥४४॥
तथैव लिंगं तातश्च महादेवस्य शापतः ।
तथैवाद्य हरेर्मूर्धा पतितो लवणांभसि ॥४५॥
सहस्रभगसम्प्राप्तिः दुःखं चैव शचीपते ।
स्वर्गाद्भ्रंशस्तथा वासः कमले मानसे सरे ॥४६॥
एते दुःखस्य भोक्तारः केन दुःखं न भुज्यते ।
संसारेऽस्मिन् महाभागस्तस्माच्छोकं त्यजन्तु वै ॥४७॥

शुभ वा अशुभ कोई भी कर्म हो उस का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। जो देह-धारी है वह अवश्यमेव दुःखों का भोक्ता होता है, इस में कोई संशय नहीं है। ब्रह्मा जी कहते हैं इसी कर्म का फल मुझ को मिला था कि शिव जी ने मेरा एक सिर काट डाला, इसी प्रकार शिव जी को कर्म का फल मिला कि ऋषियों ने उस का लिंग काट डाला, इसी प्रकार आज विष्णु को फल मिला है कि उसका सिर कट कर समुद्र में जा गिरा, जिसका पता नहीं लगता। इन्द्र को यह कर्मफल मिला

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि उनके सहस्रभग हो गई। जब ये सब कर्मफल को भोगते हैं तब कौन संसार में ऐसा है जिस को कर्म-फल भोगना नहीं पड़ता।

कहिये अब अवतारपना कहाँ गया। यहाँ तो यह सिद्धांत नियत कर दिया है कि शरीर धारण बिना कर्म के हो ही नहीं सकता, जो देहधारी हैं वे अवश्यमेव कर्मफल को भोगते हैं। विष्णु, शिव आदि के सब उदाहरण भी दे दिये।

गर्भगत दुःख

गर्भवासोद्भवं दुःखं विण्मूत्र स्नायु संयुतम्।
विष्णोरापादितं सम्यग् मया विगत लीलया ॥५॥
विदितं ते यथा विष्णुर्दुःखपाशेन मोहितः।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च सर्वे तस्या ऽवशानुगाः।
अवताराः सर्व एव मन्त्रिता इव दामभिः। दे० ४।२०॥

गभ से उत्पन्न होने वाला दुःख विष्णु को भोगना पड़ता है, विष्णु भी दुःखों के बंधन में बंधा हुआ है। इसी प्रकार शिव ब्रह्मादि कोई भी गर्भ के दुःख से बचा हुआ नहीं है।

यहाँ स्पष्ट पुराण ने इस बात को स्वीकार कर लिया है कि गर्भ में विष्णु आदि को भी दुःख होता है।

राम को फटकार

सर्वज्ञत्वं गतं कुत्र प्रभो शक्तिः कुतो गता।
यद्धे ममृगविज्ञानं न ज्ञातं हरिणा किल ॥३६॥
राजन् माया बलं पश्य रामो हि काममोहितः।
रामो विरहसंतप्तः रुरोद भृशमातुरः ॥४०॥
योऽपृच्छत् पादपान् मूढः क्व गता जनकात्मजा।दे०।४।२०॥

राम का सर्वज्ञपना कहाँ गया तथा उसकी प्रभु शक्ति कहाँ चली गई, उसको इतना भी पता नहीं लगा कि यह मारीच है या हिरण है। माया कितनी बलवान् है जो राम विरह में रोता रहा और जिस मूर्ख राम ने वृक्षों को यह पूछा कि मेरी सीता कहाँ गई। उपर्युक्त लेखों से सिद्ध है कि पुराण स्वयं रामादि को परमात्मा स्वीकार नहीं करता किंतु साधारण मनुष्यों की तरह एक कर्मफल को भोगने वाला मानता है।

युक्ति-संग्रह

(१) जब पौराणिक इस बात को स्वीकार करते हैं कि परमात्मा निराकार तथा सर्वव्यापक है, पुनः अवतार लेने के क्या अर्थ हैं। यदि कहो देवकी आदि के गर्भ में आना अवतार है तो वहाँ परमात्मा प्रथम ही विद्यमान है, पुनः गर्भ में आयेगा यह कथन ही असंगत है, यदि कहो गर्भ में होने पर भी किसी स्थान पर विशेषतया प्रकट या विशेष कार्य करने का नाम अवतार है तब भी अवतार असंगत है। अब भी निराकार परमात्मा सर्व स्थानों पर विशेष कार्य कर रहा है। किसी स्थान पर पशुओं के बच्चे उत्पन्न कर रहा है, कहीं वर्षा वर्षा रहा है इत्यादि।

(२) कई कहा करते हैं कि जैसे विद्युत् सब जगह होते हुए भी किसी खास स्थान पर खास साधन के द्वारा प्रकट होता है इसी प्रकार परमात्मा सर्व स्थानों पर होता हुआ भी किसी खास स्थान पर प्रकट होता है। इसके निम्न उत्तर हैं :—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(क) विद्युत् एक जड़ पदार्थ है अतः उसकी अवस्थाओं में भेद होता है, कहीं वह प्रकट तथा कहीं तिरोहित है किन्तु परमात्मा चेतन वा सर्वज्ञ होने से सर्वदा एक-रस रहता है। उस में तिरोभाव वा प्रकट होना विद्युत् की भाँति नहीं है।

(ख) विद्युत् विकारी, सावयव तथा गति वाला पदार्थ है अतः सर्व-व्यापक नहीं हो सकता अतः उसके लिये कभी प्रकट वा अप्रकट की अवस्था हो सकती है है, परमात्मा की नहीं।

(ग) विद्युत् दूसरे के द्वारा प्रकट वा अप्रकट किया जाता है क्योंकि वह सावयव विकारी पदार्थ है किन्तु परमात्मा नहीं।

(३) परमात्मा जिस कार्य को करने के लिये अवतार धारण करता है क्या बिना अवतार लिये उस में वह कार्य करने की शक्ति नहीं है? यदि है तब उस को अवतार धारण की क्या आवश्यकता है। जैसे अब निराकार होता हुआ सम्पूर्ण कार्य कर रहा है वैसे ही सब कार्य कर लेता है।

(४) यदि कहो कि उत्तम मानव लीला करने के लिये अवतार लेता है, तब भी ठीक नहीं, क्यों कि मत्स्य, कच्छ, वराह आदि में कोई भी मानव-लीला नहीं है। दूसरे रास-लीला, चीर हरण-लीला आदि अनेक पुराणों में अवतारों के निन्दनीय चरित्र लिखे हैं।

(५) कई कहते हैं कि मनुष्य में दुर्बलता होने से वह भली प्रकार उत्तम आदर्श जीवन प्रदर्शित नहीं कर सकता। अतः भगवान् अवतार लेता है। यह भी ठीक नहीं, क्योंकि यदि मनुष्य उत्तम आदर्श स्थापन नहीं कर सकता, तब अवतार के बताये मार्ग पर दुर्बलता के कारण चल भी नहीं सकता। पुनः अवतार लेने से क्या लाभ! तथा, दूसरी बात यह है कि भागवत में यह स्वयं लिखा है—

नैतत् समाचरेज्जातु मनसापि ह्यनीश्वरः।
विनश्यत्याचरन् मौढ्यात् यथा रुद्रोऽब्धिजं विषम् ॥१०।३३।१॥

कभी किसी अनीश्वर को यह भ्रष्टाचार मन से भी नहीं करना चाहिये, अन्यथा नष्ट हो जायेगा। गीत में तो यद्यदाचरतिः का पाठ पढ़ाया तथा यहां लिखा है कि मन से भी अवतारों का आचरण नहीं करना चाहिये।

(६) अवतारों ने मनुष्यों के आचरण करने के लिये कौन सा ऐसा कार्य दिखलाया है जिस को मनुष्य नहीं कर सकते। यदि कहो गोवर्धन पर्वत उठाया, इस का उत्तर यह है कि प्रथम तो यह बात ही असम्भव है। और दूसरी बात यह है कि इस आदर्श का लाभ क्या, क्यों कि मनुष्य तो पर्वत उठा ही नहीं सकता।

(७) पूर्णावतार वा अंशावतार में क्या भेद है, जब दोनों ही परमात्मा के अवतार हैं?

(८) कृष्ण सोलह कला पूर्ण क्यों तथा दूसरे क्यों नहीं?

तथा एते चांशकलाः पुन्सः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम् ॥

भा० १।३।२८।

ये सब अवतार तो पुरुष के अंश हैं तथा कृष्ण स्वयं भगवान् हैं। इस के यह अर्थ हैं कि सिवाय कृष्ण के अन्य अवतार परमात्मा नहीं। गीता में आता है "ममैवांशो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीव लोके । " इस से सब ही प्राणी अवतार हो गये क्योंकि पौराणिकों के कथनानुकूल सब जीव ब्रह्म के अंश हैं । अंश में तथा भगवान् में क्या भेद है ? क्या कृष्ण में सम्पूर्ण परमात्मा आ गया था, रामादि में परमात्मा का टुकड़ा था ? जब परमात्मा सर्वव्यापक है तब सम्पूर्ण कृष्ण में कैसे आ गया तथा अखंड परमेश्वर टुकड़ा बन कर राम में कैसे आ गया, अतः अंशावतार वा पूर्णावतार को सिद्ध करना असम्भव है ।

(९) कृष्ण सोलह कला पूर्ण था इस के क्या अर्थ हैं ? कला क्या हैं ? प्रश्नोपनिषद् के छठे प्रश्न में लिखा है—

१ प्राण, २ श्रद्धा, ३ आकाश, ४ वायु, ५ ज्योति, ६ जल, ७ पृथिवी, ८ इन्द्रिय, ९ मन, १० अन्न, ११ वीर्य, १२ तप, १३ मन्त्र, १४ कर्म, १५ लोक, १६ नाम, ये कला प्रत्येक प्राणी में होती हैं, पुनः तुम्हारे अवतार में क्या विशेषता है ?

(१०) अवतारों के शरीर भौतिक हैं या अभौतिक, स्वकर्मार्जित हैं या परकर्मार्जित ? मायिक हैं या अमायिक ? अभौतिक तो हो नहीं सकते क्योंकि सब नश्वर थे, भौतिक होने से हमारे शरीरों से उन का भेद क्या, अपने कर्म तो थे नहीं, यदि हमारे कर्म से बने तब हमारी तरह उनको कष्ट भी होगा, यदि कष्ट है तब हमारी तरह परमात्मा नहीं ।

(११) परमात्मा का शरीर दो अवस्थाओं में हो सकता है, एक तो यह कि वह साकार हो जाये ; यह हो नहीं सकता क्योंकि संसार में जितनी साकार वस्तुएँ हैं वे सब परमाणुओं से बनी हैं । यदि परमात्मा के भी परमाणु मानें तब प्रत्येक परमाणु का नाम परमात्मा है या सब परमाणुओं से मिल कर जो बना है वह परमात्मा है ? यदि सब परमाणुओं का नाम परमात्मा है तब अनन्त ईश्वर होने से संसार की व्यवस्था नहीं चलेगी तथा वेद से भी विरोध आयेगा, यदि अनेक परमाणुओं से बनी हुई वस्तु का नाम परमात्मा है तब वह नश्वर होगी । तब बनने से प्रथम भी नहीं थी; पुनः उस को किस ने बनाया ?

यदि कहो जीव की तरह शरीर धारण करता है तब भी ठीक नहीं, मैं पीछे पुराणादि के प्रमाणों से यह सिद्ध कर चुका हूं कि बिना कर्मों के शरीर नहीं होता तथा जहां शरीर होता है वहां दुःखादि अवश्य होते हैं । तथा योगदर्शनादि में जो परमात्मा के लक्षण किये हैं उन से स्पष्ट कर्मादि का निषेध होता है अतः किसी भी अवस्था में परमेश्वर का शरीर सिद्ध नहीं होता ।

(१२) जब पौराणिकों के मत में सिवाय ब्रह्म के और कोई पदार्थ नहीं है, सम्पूर्ण संसार ब्रह्म है तब अवतार किस का किस के लिये, रावण भी ब्रह्म तथा राम भी ब्रह्म, कंस भी ब्रह्म तथा कृष्ण भी ब्रह्म ।

(१३) गीता में लिखा है—"यद्गत्वा न निवर्तन्ते" मुक्त जीव की पुनरावृत्ति नहीं होती, वह ब्रह्म हो जाता है । जब मुक्त जीव ब्रह्म बन कर नहीं लौटता तब ब्रह्म के संसार में अवतार कैसे हो जायेंगे ?

(१४) जब गज-बंधन मोचन रूपी तुच्छ घटनाओं से भगवान् ने अवतार धारण कर लिया तब आज इतने अत्याचार वा हज़ारों गौओं पर छुरी चलाने पर भी भगवान् अवतार क्यों नहीं लेते ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२४ अवतारों की आलोचना

वराहावतार

यत्रोद्यतःक्षितितलोद्धरणाय विभ्रत् कौडीं तनुं सकल यज्ञमयीमनन्तः ।
अन्तर्महार्णवमुपागतमादि दैत्यं तं दंष्ट्रयाद्रिमिव वज्रधरो ददार । भा० २।७।१।।

उस अनन्त प्रभु ने पृथिवी का उद्धार करने के लिये सूअर का शरीर धारण किया और दाँतों से राक्षस को चीर डाला ।

आलोचना

जब परमात्मा सर्वव्यापक है पुनः पृथिवी में तथा राक्षस में भी विद्यमान था । पुनः अवतार धारण करने की क्या आवश्यकता थी ? क्या बिना अवतार के पृथिवी का उद्धार नहीं कर सकता था ? सूअर का रूप धारण क्यों किया ? इससे भगवान् ने मनुष्यों के लिये कौन सा श्रेष्ठ आदर्श स्थापन किया । जब आपके कथनानुसार कृष्ण पर्वत उठा सकता है, पुनः क्या मनुष्य शरीर धारण कर के पृथिवी का उद्धार नहीं कर सकते थे ?

कपिलावतार

जज्ञे च कर्दमगृहे द्विज देवहूत्यां स्त्रीभिः समं नवभिरात्मगतिं स्वमात्रे ।
ऊचे ययात्ममलं गुण सङ्ग पंकमस्मिन् विधूय कपिलस्य गतिं ।प्रपेदे ।२।७।३।।

कर्दम के घर देवहूति में नव बहिन सहित कपिल का अवतार हुआ तथा अपनी माता को उपदेश दिया वह कपिल की गति को प्राप्त हुई ।

समालोचना

एक अपनी माता को उपदेश देने के लिये भगवान् ने अवतार धारण किया, आज भारत में करोड़ों मातायें मूर्खा तथा विधर्मियों से पीड़ित हो रही हैं, तब भगवान् अवतार धारण क्यों नहीं करते ?

पौराणिकों के कथनानुसार सांख्य में नास्तिकता का उपदेश है तो क्या कपिल का अवतार संसार को नास्तिक बनाने के लिये हुआ था ? यदि कपिल अवतार था तब स्वामी शङ्कर ने वे० अ० २ पा० १ । २ में यह क्यों लिखा ?—

न तया श्रुतिविरुद्धमपि कापिलं मतं श्रद्धातुं
शक्यम् । कापिलं मतं निंद्यात् इति गम्यते अतश्च
सिद्धमात्मभेदकल्पनयापि कपिलस्य मतं वेदविरुद्धम् ।

वेद के विरुद्ध होने से कपिल का शास्त्र मानने के योग्य नहीं किन्तु भेद प्रतिपादक होने से निन्दनीय है । यदि कपिल अवतार थे तब शङ्कर ने उनको अवतार क्यों नहीं माना तथा उनके शास्त्र की निन्दा क्यों की ?

दत्तात्रेयावतार

अत्रेरपत्यमभिकांक्षत आह तुष्टो दत्तो मयाहमिति यद्भगवान् स दत्तः ।
यत्पादपंकजपराग पवित्रदेहाः योगर्द्धिमापुरुभयां यदुहैहयाद्याः ।।४।।

अत्रि पुत्र की इच्छा कर रहे थे । तब भगवान् ने प्रसन्न हो कर कहा कि मैं ने अपने आपको तुम को दे दिया है और उसके घर दत्तात्रेय का अवतार धारण किया ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समालोचना

यहाँ कौनसा धर्म का बड़ा भारी संकट था जिसको देख कर भगवान् ने अवतार धारण किया। क्या इस कार्य को मनुष्य नहीं कर सकते थे ?

सनत्कुमारावतार

तप्तं तपो विविधलोकसिसृक्षया मे
आदौ सनत् स्वतपसः स चतुः सनो भूत्।
प्राक्कल्पसंप्लवविनष्टमिहात्मतत्त्वं
सम्यग् जगाद मुनयो यदचक्षतात्मन् ॥५॥

सृष्टि की रचना की इच्छा से मैंने जब घोर तप किया तब मुझ से चार अवतार सनत्कुमार, सनक, सनन्दन, सनातन उत्पन्न हुए।

समालोचना

परमात्मा तप क्यों करता है, क्या वह बिना तप के सृष्टि रचना नहीं कर सकता ? जब एक अवतार से काम चल सकता है तब चार अवतार धारण क्यों किये ? क्या इस धर्मोपदेश को मनुष्य नहीं कर सकता ?

नरनारायणावतार

धर्मस्य दक्षदुहितुर्यजनिष्ट मूर्त्या नारायणो नर इति स्वतपः प्रभावः।
दृष्ट्वात्मनो भगवतो नियमावलोपं देव्यस्त्वनंगपृतना घटितुं न शेकुः ॥६॥

कामं दहंति कृतिनो ननु रोषदृष्ट्या रोषं दहन्तमुत तेन दहन्त्यसह्यम्। सोऽयं यदंतरमलं निविशन् बिभेति कामः कथं नु पुनरस्य मनः श्रयेत ॥७॥

दक्ष की दुहिता मूर्त्ति में भगवान् ने नर-नारायण का अवतार ले कर घोर तप किया। अनेक अप्सरायें भी उनका तप भङ्ग न कर सकीं। शिवजी ने काम को भस्म किया किन्तु रोष को भस्म न कर सके, भगवान् ने उसको भी भस्म कर दिया।

समालोचना

यह अवतार किस राक्षस को मारने के लिये हुआ, इसने कौन से धर्म की रक्षा की ? जब यह परमात्मा था तब तप करने की क्या आवश्यकता थी ?

ध्रुवावतार

विद्धः स पत्न्युदित पत्रिभिरंति राज्ञो बालोऽपि सन्नुपगतस्तपसे वनानि।
तस्मा अदाद् ध्रुवगतिं गृणते प्रसन्नो दिव्याः स्तुवन्ति मुनयो यदुपर्यधस्तात्।२।७।८

राजकुमार ध्रुव को जब उसकी विमाता ने वाग् बाणों से विद्ध किया तब वह बच्चा होने पर भी तप के लिये वन में चला गया। जब उसने भगवान् की स्तुति की तब भगवान् ने उसको ध्रुव गति प्रदान की।

समालोचना

ध्रुव जी ने किस पाप-नाश वा धर्म-रक्षा के लिये अवतार धारण किया ? यहाँ तो लिखा है जब उसने स्तुति की तब भगवान् ने उसको ध्रुव-पद प्रदान किया, पुनः वह अवतार कैसा ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृथु अवतार

यद्वेनमुत्पथगतं द्विजवाक्यवज्रविसृष्ट पौरुष भगं निरये पतंतम् ।
त्रात्वार्पितो जगति पुत्र पंचक लेभे दुग्धा वसूनि वसुधा सकलानि येन ।।९।।

जब राजा वेणु कुमार्गगामी हो गया, द्विजों के वाक्य से उसका ऐश्वर्य तथा बल नष्ट हो गया तब भगवान् ने पृथु का अवतार लिया तथा सब वसुधा का दोहन किया ।

समालोचना

इस कार्य को सांसारिक राजा भी कर सकते हैं पुनः अवतार लेने की क्या आवश्यकता थी ?

ऋषभावतार

नाभेरसावृषभ आस सुदेविसूनु र्यो वै चचार समदृग्जडयोगचर्याम् ।
यत् पारहंस्यमृषयः पदमामनंति स्वस्थः प्रशांतकरणः परिमुक्तसंगः ।।१०।।

नाभि के घर सुदेवी से ऋषभ अवतार हुआ, जिसने जड़योग वा समाधि लगाना प्रारम्भ किया ।

यो हि वाव स भगवान् लोकमिमं योगस्याद्धा प्रतीप-
मिवाचक्षाणस्तत् प्रति क्रिया कर्म बीभत्सितमिति
व्रतमाजगरमास्थित शयान एवाश्नाति पिवति खादत्यव-
मेहति हदति स्म चेष्टमानः उच्चरित आदग्घोद्देशः ।।

भा० ५ । ५ । ३२।।

ऋषभदेव अजगर की तरह पड़े रहते थे, सोए ही खाते पीते लेटते मूत्र तथा पुरीषोत्सर्ग करते तथा सारे शरीर में टट्टी लपेट कर पड़े रहते थे ।

समालोचना

मैं अवतारवादियों से पूछता हूँ कि ऋषभदेव ने कौन सा अवतार वाला काम किया, गीता के आदेश के अनुसार अब पौराणिकों को भी वैसा ही आचरण करना चाहिये तथा टट्टी लपेट कर पड़े रहना चाहिये । योगाभ्यास अनेकों संसार के जीव करते हैं, पुनः ऋषभ अवतार ने क्या विशेषता दिखलाई ?

हयग्रीवावतार

सत्रे ममास भगवान् हयशीर्षाथो साक्षात् स यज्ञपुरुषस्तपनीय वर्णः ।
छंदोमयो मखमयोऽखिल देवतात्मा वाचो बभूवुरुशती श्वसतोऽस्य नासः ।।११।।

घोड़े का शिर लगा कर भगवान् यज्ञ में प्रकट हुए, छन्दोमय, मखमय उनके नाक से वेद उत्पन्न हुए ।

समालोचना

देवी भागवत में तो विष्णु रो कर कहते हैं कि जब मेरा सिर कट गया तब न मिलने पर हे ब्रह्मा तुम ने घोड़े का सिर लगा दिया, यह मेरा उपहास है तथा यहां हयग्रीव का अवतार माना है, पुनः उसके नाक से वेद उत्पन्न हुए । वेद तथा परमात्मा का अच्छा उपहास है !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मत्स्यावतार

भुजङ्गरज्वा मत्स्यस्य शृंगे नावमयोजयत् ।
उपर्युपस्थितास्तस्याः प्रणिपत्य जनार्दनम् ।।

मत्स्य० । २ । १९ ।।

मत्स्य अवतार के सींग से सांप की रस्सी बना कर मनु जी ने अपनी नाव बांध ली ।

समालोचना

प्रथम तो भगवान् का मच्छ बनना, पुनः उस के सींग का होना, फिर सांप का रस्सा बनाना, ये सब बातें असम्भव तथा असङ्गत हैं । क्या परमात्मा बिना मच्छ के नौका को डूबने से नहीं बचा सकता था ।

कच्छावतार

तमुत्थितं वीक्ष्य कुलाचलं पुनः समुत्थिता निर्मथितुं सुरासुराः ।
दधार पृष्ठेन स लक्षयोजनप्रस्तारिणा द्वीप इवापरो महान् ।। ९ ।।

सुरासुरेन्द्रैर्भुजवीर्यवेपितं, परिभ्रमन्तं गिरिमंङ्गपृष्ठतः
बिभ्रन्तदा वर्तनमादि कच्छपो मेनेऽङ्गकण्डूयनमप्रमेयः ।।

भा० ८ । ७ । १० ।।

जब देवता तथा असुर समुद्र मन्थन करने लगे तब ४ लाख कोस चौड़े पर्वत को भगवान् ने कछुआ बन कर अपनी पीठ पर रख लिया । जब बल से उस पर्वत को देवताओं और असुरों ने चलाया तब भगवान् के केवल खुजली सी होने लगी ।

समालोचना

जहां परमेश्वर को मच्छ बनाया वहाँ अब कछुआ भी बना दिया । पौराणिकों की विचित्र लीला है । भला, यहां कौन सी मानवलीला कर के मनुष्यों के लिये आदर्श स्थापन कर रहे हैं ? यदि कछुए में इतना भार उठाने की शक्ति थी, तब परमात्मा बिना ही अवतार के सारे संसार को धारण कर रहा है, पुनः कछुआ बनने की क्या आवश्यकता थी ?

नृसिंहावतार

त्रैविष्टपोरुभयथा स नृसिंह रूपं कृत्वा भ्रमभ्रकुटिदंष्ट्करालवक्त्रम् ।
दैत्येन्द्रमाशु गदयाऽभिपतन्तमारादूरौ निपात्य विददार नखैः स्फुरन्तम् ।। १४।।

महाराज ने नृसिंह का रूप धारण किया, भ्रकुटि घुमाई तथा बड़े भयानक दाँत से जब राक्षस गदा का प्रहार करने लगा तब भगवान् ने पटक कर नखों से फाड़ डाला ।

समालोचना

पौराणिक मत भी संसार में एक विचित्र मत है, वराहादि सर्वथा पशु, तथा रामादि सर्वथा मनुष्य, तथा यह नृसिंह न मनुष्य और न पशु इस में दोनों शरीर मिले हुए हैं । मैं इन पौराणिकों से पूछता हूं कि क्या नित्य शुद्ध, बुद्ध, मुक्त-स्वभाव ब्रह्म का यह उपहास नहीं है ? क्या इस स्वांग के बिना राक्षस नहीं मर सकता था ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हरि अवतार

अन्तः सरस्युरुबलेन पदे गृहीतो ग्राहेण यूथपतिरम्बुजहस्त आर्तः।
आहेदमादिपुरुषाखिल लोकनाथ तीर्थश्रवः श्रवणमङ्गलनामधेयः ॥१५॥

श्रुत्वा हरिस्तमरणार्थिनमप्रमेयश्चक्रायुधः पतगराजभुजाधिरूढः।
चक्रेण नक्रवदनं विनिपाट्य तस्माद्धस्ते प्रगृह्य भगवान् कृपयोज्जहार ॥ १६ ॥

तालाव के अन्दर बड़े वेग से जब ग्राह ने हाथी को पकड़ लिया, हाथी ने दुःखी हो कर भगवान् से प्रार्थना की—हे लोकनाथ ! आपका नाम लेने ही से मनुष्य दुःखों से छूट जाता है, आप मेरा कल्याण करें। इस गज की प्रार्थना को सुन कर भगवान् गरुड़ पर चढ़ कर आये और चक्र से ग्राह को मार डाला तथा अपने हाथ से पकड़ कर गज का उद्धार किया।

समालोचना

प्रथम तो यही बात असम्भव है कि हाथी ने भगवान् से प्रार्थना की। जब आजकल पौराणिक कलकत्ते में देवी के नाम से सैकड़ों भैंसे काट डालते हैं, तब भगवान् अवतार क्यों नहीं लेते। जब भगवान् पानी में विद्यमान थे, तब बाहिर से आने की क्या आवश्यकता थी ? एक साधारण हाथी को बचाने के लिये भगवान् गरुड़ पर चढ़ कर आ गये, आज प्रतिदिन हजारों गौओं के गले काटे जाते हैं, कितने ही निष्पाप आर्य बच्चे मारे जाते हैं, आर्य ललनाओं की लज्जा उतारी जाती है, तब आप के भगवान् कौन सी गुहा में जा छिपे जो अवतार नहीं लेते ?

वामनावतार

ज्यायान् गुणैरवरजोऽप्यदिते सुतानां लोकान् विचक्रम इमान् यदथाधियज्ञः।
क्ष्मां वामनेन जगृहे त्रिपदच्छलेन यञ्चामृते पथि चरन् प्रभुभिर्न चाल्यः ॥१७॥

नार्थो बलेरयमुरुक्रमपादशौचमापः शिखाधृतवतो विबुधाधिपत्यम्।
यो वै प्रतिश्रुतमृते न चिकीर्षदन्यदात्मानमङ्ग शिरसा हरयेऽभिमेने ॥१८॥

जो बलि अत्यन्त धर्मात्मा था, उसको भगवान् ने छल से वश में किया, क्योंकि वह सुमार्गगामी बली वैसे वश में नहीं आता था। उस धर्मात्मा बलि ने कोई याचना नहीं की, किन्तु अपने वचन को निभाया। बलि अत्यन्त लाभ रहित था।

समालोचना

जो बलि धर्मात्मा था तब उसको क्यों छला, धर्मात्माओं को छलना अवतारों का कार्य है ? परमात्मा का छल करना क्या उसके ईश्वरीय गुणों में दोष लगाना नहीं है ? जब भगवान् ने छल किया तब बलि भी इनकार कर देता तब तुम्हारे वामन का क्या रहता ? यदि कहो वह बल से ले लेते तब छल की क्या आवश्यकता थी, प्रथम ही ले लेते ? इस वामनावतार से तो बलि ही धर्मात्मा है।

हंसावतार

तुभ्यं च नारद भृशं भगवान् विरुद्धभावेन साधु परितुष्ट उवाच योगम्। ज्ञानं च भागवतमात्मसतत्त्वदीप यद्वासुदेव शरणाः विदुरञ्जसैव ॥१९॥

हे नारद ! भगवान् ने हंसावतार ले कर तुम को आत्मज्ञान प्रदान किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समालोचना

जब नारद भी अवतार है तथा हंस भी अवतार है तब क्या अवतार का अवतार को ज्ञान देना मूर्खता नहीं है ?

धन्वन्तरि अवतार

धन्वन्तरिश्च भगवान् स्वयमेव कीर्त्तिनाम्ना नृणां पुरुभुजां रुज आशु हन्ति । यज्ञे च भागममृतायु रवावरुन्ध आयुश्च वेदमनुशास्त्यवतीर्य लोके ॥२१॥

भगवान् ने धन्वन्तरि अवतार ले कर अनेक प्रकार की औषधियों का उपदेश देकर रोगों का नाश किया तथा आयुर्वेद का उपदेश किया ।

परशुरामावतार

त्रिःसप्त कृत्वः पृथिवीं कृत्वा निःक्षत्रियां प्रभुः ।
स्वमन्तपञ्चके चक्रे शोणितोदान् ह्रदान्नव ॥

भा० ९।१६।१९ ॥

भगवान् परशुराम ने २१ बार क्षत्रियों को मार कर संसार को निःक्षत्रिय किया तथा नव तालाब क्षत्रियों के खून से भर कर अपने पिता का तर्पण किया ।

समालोचना

जिस क्षात्र धर्म की वेद में इतनी प्रशंसा आती है उसको मिटाना क्या परले दरजे की दुष्टता नहीं है ? पुनः ९ तालाब क्षत्रियों के रक्त से भरना और भी दुष्टता है । यदि बाप का बदला लेना था तब हत्यारे को मारते, इस प्रकार लाखों आदमियों का वध करना, जिनमें बालक भी सम्मिलित थे, अवतारों का काम है या पामरों का ? जब राम तथा परशुराम दोनों ही अवतार थे तब एक दूसरे के विरुद्ध कार्य क्यों किया ? राम ने ब्राह्मण को मारा तथा आपस में क्यों लड़े ? क्या एक अवतार से कार्य नहीं हो सकता था ?

कृष्णावतार

भूमेः सुरेतर वरूथ विमर्दितायाः क्लेशं व्यपास्य कलयाऽसित कृष्ण-केशः । जातः करिष्यति जनानुपलक्ष्य मार्गः कर्माणि चात्ममहिमोपनिबन्ध-नानि ॥२६॥

दुःखित पृथिवी का भार उतारने के लिये श्वेत तथा काले बाल का कृष्ण अवतार होगा ।

समालोचना

पौराणिक कहा करते हैं कृष्णावतार १६ कला पूर्ण है, यहाँ तो लिखा है कृष्ण केश से उत्पन्न हुआ ।

व्यासावतार

कालेन मीलितधियामवमृश्य नृणां स्तोकायुषां स्वनिगमो वत दूर पारः । आविर्हिस्त्वनु युगं स हि सत्यवत्यां वेद द्रुमं विटपशो विभजिष्यति स्म ॥३६॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कलियुग में अल्पायु अल्पबुद्धि मनुष्य सम्पूर्ण वेद को नहीं पढ़ सकते अतः व्यासावतार ले कर भगवान् वेद का शाखाओं के रूप में विभाजन करेंगे ।।

बुद्धावतार

देव द्विषां निगम वर्त्मनि निष्ठितानां पूर्भिर्मयेन विहिताभिरदृष्ट-पूर्त्तिः । लोकांघतामतिविमोहमतिप्रलोभं वेशं विधाय बहु भाष्यत औप-धर्म्यम् ।।३७।।

अलक्ष्य योग वाले मय दैत्य के बनाये पुर में बैठ कर देवताओं का द्रोही और वेदमार्ग में लगे हुए दैत्यों की बुद्धि को भ्रमाने वाला अति मनोहर वेश बनाकर लोगों का नाश करते हुए पाखंड धर्म का उपदेश करेंगे ।

समालोचना

जब बुद्ध अवतार थे तब शंकर के कथानानुकूल व्यासजी ने वेदांत में बुद्ध के विचारों का खण्डन क्यों किया ? क्या एक अवतार दूसरे अवतार के विरुद्ध है ? जब दैत्य वेदमार्ग पर चल रहे थे तब उनको उस सत्य वैदिक मार्ग से हटाकर विपरीत मार्ग का उपदेश देकर धर्म से भ्रष्ट करना अवतारों का काम है या राक्षसों का ? उदयनाचार्यादि सैकड़ों विद्वानों ने बुद्ध के विचारों का खण्डन किया है । जिन काँटों को अवतार ने फैलाया उनको जीवों ने दूर किया । अवतार से तो जीव ही श्रेष्ठ हुए । इस बुद्धावतार में धर्म की रक्षा कहाँ गई ? क्या धर्ममार्ग पर चलते हुए दैत्यों को धोखे से बुद्धावतार ने कुमार्ग पर नहीं चलाया ?

कल्कि अवतार

यद्यालयेष्वपि सतां न हरेः कथा स्युः
पाखण्डिनो द्विजजनाः वृषलाः नृदेवाः ।
स्वाहा स्वधा वषडिति स्म गिरो न यत्र
शास्ता भविष्यति कलेर्भगवान् युगांते ।। ३८ ।।

जब श्रेष्ठ पुरुषों के घरों में हरि की कथायें नहीं होंगी, द्विज पाखण्डी हो जायेंगे, राजा शूद्र हो जायेंगे, घरों में हवनादि नहीं होंगे, तब कलियुग के अन्त में भगवान् अवतार लेंगे ।

समालोचना

सतयुग त्रेता आदि जो अत्यन्त उत्तम युग थे उनमें तो भगवान् झटपट अनेक अवतार धारण कर लेते हैं । जिस युग में अत्यन्त अधर्म है उसमें केवल एक अवतार लेंगे, वह भी युग के अन्त में । इस युग में तो सबसे अधिक अवतार लेने चाहियें थे ।

क्या अवतार नियत हैं ?

अवतारा असंख्येया हरेः सत्त्वनिधेर्द्विजाः ।
यथा विदासिनः कुल्याः सरसः स्यु सहस्रशः ।।
भा० १ । ३ । २७ ।।

भगवान् के अवतार असंख्य हैं जैसे बड़े सरोवर में असंख्य झरने निकलते हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषयो मनवो देवाः मनुपुत्राः महौजसः ।
कलौ सर्वे हरेरेव सप्रजापतयस्तथा ॥२७॥
एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम् ।

ऋषि मनु-देव मनु के पुत्र आदि सब अवतार हैं।

समालोचना

जब असंख्य अवतार हैं तब इस बात के लिए तुम्हारे पास क्या प्रमाण है कि फलाँ अवतार है तथा फलाँ नहीं, क्यों कि बुद्धादि नास्तिक भी अवतार हैं तथा आस्तिक भी, जब ऋषि आदि सब अवतार हैं तब तुम्हारे विशेषावतार की क्या आवश्यकता है ? यदि कहो, कतिपय पूर्ण अवतार तथा कई अंशावतार हैं तब मैं पूछता हूँ कि सब परमात्मा तो एक शरीर में आ नहीं सकता, पुनः सब ही अंशावतार हुए, क्या ऐसा भी होता है कि परमात्मा के एक भाग में अधिक शक्ति हो तथा दूसरे में न्यून हो ?

अंशाधिकरण के भाष्य में शङ्कर कहते हैं—

दासा य एते कैवर्त्ताः प्रसिद्धा ये चामी दासा
ये चान्ये कितवा द्यूत वृत्तास्ते सर्वे ब्रह्मैवे ति ।
हीन जन्तूदाहरणेन सर्वेषामेव नामरूप कृतकार्यकरण सन्व्यत
प्रविष्टानां ब्रह्मत्वमाह । अन्यत्रापि त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार
इत्यादि । वे० २ । ३ । ४३ ।

दास कितव जुआरिये आदि सब जन्तु ब्रह्म ही हैं। कहिये, अब आपके अंशावतार कहाँ गये। यहाँ तो स्वामी शंकर ने कीट पतंग आदि सबको ही अवतार सिद्ध कर दिया।

शंका

उपनिषदों में यह स्पष्ट आता है कि चांद सूर्य उसकी आंखें हैं, दिशा श्रोत्र हैं, क्या इससे परमात्मा का शरीर सिद्ध नहीं होता ?

समाधान

रूपोपन्यासाच्च वे० १ । २ । २३ ।

इस परमात्मा की सृष्टि में रूपकालंकार द्वारा सृष्टि की वस्तुओं को मुख आदि के स्थान पर वर्णन किया है। वास्तव में मुखादि नहीं हैं। जैसे—

अग्नि र्मूर्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशः श्रोत्रे वाग्विवृताश्च वेदाः
वायुः प्राणो हृदय विश्वमस्य पद्भ्यां पृथिवी ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा ॥मुं०२।४

उस प्रभु की सृष्टि की अग्नि मूर्धा है सूर्य तथा चन्द्रमा नेत्र हैं। दिशा श्रोत्र हैं वेद वाणी है वायु प्राण है पृथिवी पाद अर्थात् पैर के समान है। इस वचन में परमात्मा के मुखादि का वर्णन नहीं है किन्तु उन भगवान् की बनाई इस विशाल सृष्टि में चांद सूर्य आदि नेत्र के समान हैं, पृथिवी चरण के समान है। इन प्रमाणों से परमात्मा के मुखादि कदापि सिद्ध नहीं होते।

अवतारवाद के सम्बन्ध में जो प्रमाण पक्ष तथा विपक्ष में उपस्थित किये जाते हैं, मैंने उन सबका विचार करके यह सिद्ध कर दिया है कि परमात्मा का अवतार नहीं होता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्याधरी

भारत की सुशिक्षिता महिलाओं की चर्चा छिड़ते ही विद्याधरी का नाम सबके मन में सुख का संचार करने लगता है। आज भी देशी या विदेशी लोग जब उस विदुषी के बारे में पढ़ते हैं, तो श्रद्धा के प्रवाह में नतमस्तक हो जाते हैं।

विद्याधरी का जन्म भारतभूमि के लिए सौभाग्यसूचक माना जाता है। उसका एक और नाम भी था—उभयभारती।

बचपन से ही उभयभारती की विद्या में गहरी रुचि थी। माता-पिता अपने भाग्य को सराहने लगते जब वे अपनी पुत्री में ज्ञान के लिए अपार उत्साह देखते। इसीलिए माता-पिता ने उभयभारती को कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष और वेद-वेदांगों का समस्त पठन करवाया।

वास्तव में उभयभारती की बुद्धि इतनी तीव्र थी कि वह जिस विषय पर भी ध्यान लगाती, उसकी पूरी गम्भीरता से मनन करती। परिणाम यह हुआ कि उसकी विद्वत्ता की चर्चा धीरे-धीरे समस्त भारत में व्याप्त होती गई।

ज्ञानार्जन के साथ-साथ उभयभारती की आयु भी पूरे यौवन को पहुँच रही थी। इससे माता-पिता का चिन्तित होना स्वाभाविक ही था।

एक कहावत है कि 'पुत्री का जन्म लेना माता-पिता की चिन्ता का कारण बनता है; उससे बड़ी परेशानी इस बात में होती है कि किससे साथ ब्याही जाय ?'

उभयभारती, जो अब विद्याधरी के नाम से अधिक जानी जाती थी, इस कहावत के अनुसार माता-पिता के लिए, दिनप्रतिदिन एक समस्या बनती जा रही थी। वह एक नव-यौवना ही नहींथी, सुशिक्षिता भी थी। सुशिक्षिता भी ऐसी कि उसकी तुलना का योग्य वर ढूंढ़ पाना एक कठिन समस्या बन गई थी।

माता-पिता ने योग्य वर खोज निकालने के लिए रात-दिन एक कर दिया। यदि कोई विद्वान् युवक मिलता तो उसके पास जीविका का साधन न होता; यदि कोई खाते—पीते परिवार का होता तो विद्याधरी की तुलना में मूर्ख प्रतीत होता।

आखिर विद्याधरी ने अपने माता-पिता को इस चिन्ता से उबारने का निश्चय करके स्वयं संकल्प लिया और उसने धनी—सम्पन्न व्यक्ति की अपेक्षा विद्वान् पण्डित मण्डनमिश्र के विषय में माता-पिता को अपनी स्वीकृति का संकेत दे दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वाभाविक है कि समस्या का ऐसा समाधान पाकर माता-पिता की प्रसन्नता की सीमा न रही। शुभ मुहुर्त आदि देखकर विद्याधरी का विवाह वदिक रीति के अनुसार मण्डनमिश्र के साथ कर दिया गया।

मण्डन मिश्र वेद-प्रचार का कार्य काशी में रहकर कर रहे थे। उनकी विद्वत्ता का डंका तो पहले ही घर-घर बज रहा था; विद्याधरी को पाकर तो जैसे सोने को सुगन्धि मिल गई। चारों ओर इस युगल की कीर्ति का गुणगान गूंज उठा।

उन दिनों भारतभूमि में बौद्धों का जोर था। वैदिक व्यक्तियों और वैदिक विधियों की सर्वत्र हँसी उड़ाई जाती थी। विश्वामित्र के प्रति करुणा और मैत्री से परिपूर्ण भगवान् बुद्ध की वास्तविक शिक्षा को भुलाकर बौद्ध लोग मनमाने कृत्य करने लगे थे। जो बौद्ध विहार धर्म—स्रोत थे, अब विलास-भूमि बनकर देश को पतन की ओर ले-जा रहे थे। अहिंसा के नाम पर अकर्मण्यता और कायरता का पाठ पढ़ाया जा रहा था।

ऐसे समय में ज्ञान के मार्तण्डय बाल ब्रह्मचारी स्वामी शंकराचार्य सारे आर्य्यावर्त में भ्रमण कर बौद्धों से शास्त्रार्थ कर इसके साथ ही वैदिक पण्डितों को पराजित परखना, अपना कर्तव्य समझते थे।

एक बार स्वामी शंकराचार्य घूमते-घूमते प्रयाग पहुँचे। वहाँ उन्होंने विद्याधरी तथा मण्डन मिश्र की विद्वत्ता की चर्चा सुनी। उनकी विद्या का प्रभाव सुनकर स्वामी शंकराचार्य उनसे शास्त्रार्थ करने के लिए काशी पहुँचे। काशी पहुँचकर उन्होंने एक कुएँ के समीप जाकर कुएँ पर जल भरती हुई कहारियों से मण्डन मिश्र का घर पूछा। उनके उत्तर में कहारियों ने कहा—

'जिस गृह के द्वार पर घोंसलों में बैठे हुए अनेक प्रकार के तोते प्रत्यक्ष, अनुमान उपमान, शब्द इन चारों प्रमाणों से ब्रह्म—विद्या पर विचार करते हैं, उसे मंडन मिश्र का घर समझो।'

शंकराचार्य यह सुनकर अतीव विस्मित हुए। सोचने लगे कि जहाँ की कहारियां भी इतनी पढ़ी हुई है वहां के निवासी मण्डन मिश्र तो बहुत अधिक विद्वान् होंगे। इस प्रकार सोचते वे मण्डन मिश्र के द्वार पर पहुँचे।

मण्डन मिश्र यद्यपि धनी नहीं थे, फिर भी अतिथि सेवा और दान-दक्षिणा में सदा तत्पर रहते थे। उनके घर में कभी सत्संग होता, कभी अध्यात्म-विषय पर सुमधुर वाद-विवाद होता, कभी साधु-संतों तथा ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता, कभी जिज्ञासुओं के प्रश्नों का उत्तर दिया जाता।

जिस समय स्वामी शंकराचार्य जी मण्डन मिश्र के घर पहुँचे, उस समय वे विद्वान् ब्राह्मणों को भोजन करा रहे थे। प्रतिनिष्ठा विद्याधरी छाया के समान उनका अनुकरण करती हुई पूरी सहायता दे रही थी। उन्होंने नवागत संन्यासी को बड़ सत्कार के साथ सुन्दर आसन पर बिठाया तथा मधुर वाणी बोलते हुए उन्हें भोजन कराकर कुशल-समाचार पूछा।

शंकराचार्य ने कहा, "हे विद्वद्वर्य ! हे आदरणीय महानुभाव ! मैंने आपकी कीर्ति सुनी है, मेरी इच्छा आप से शास्त्रार्थ करने की हुई है। कहिये आपकी क्या सम्मति है ?"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मण्डन मिश्र ने तनिक मुस्कराते हुए गम्भीर और मधुर वाणी में इस प्रकार उत्तर दिया, स्वामिन् ! आप क्या कहते हैं ? कहाँ आप जैसे तत्ववेत्ता और कहाँ मुझसा गृहस्थ । मेरा और आप का शास्त्रार्थ कैसा ! आज्ञा कीजिए ।"

शंकराचार्य ने कहा, "हे परमविद्वान् महाभाग ! ऐसा न कहो । विद्वत्ता में संन्यासी हो या गृहस्थी, बालक हो या वृद्ध, स्त्री हो या पुरुष, सब एक-सा प्रभाव रखने के अधिकारी हैं । मैं आपका पांडित्य सुन चुका हूँ । अब केवल उसे प्रत्यक्ष करने की कामना है । शास्त्रार्थ अवश्य कीजिये ।"

शंकराचार्य को शास्त्रार्थ के लिए कटिबद्ध जानकर मण्डन मिश्र ने स्वीकृति दे दी ।

अब एक और उलझन उत्पन्न हुई । एक ओर थे दिवाकर की भाँति-तेज-पुञ्ज पण्डित-श्रेष्ठ मण्डन मिश्र, और दूसरी ओर थे विद्वन्मणि स्वामी शङ्कराचार्य इन दोनों महापण्डितों के शास्त्रार्थ में मध्यस्थ कौन बने ? उनसे भी उच्चकोटि के विद्वान् का मिलना कठिन ही था ।

तब शंकराचार्य ने विद्याधरी के लिए प्रस्ताव किया, जैसे मण्डन मिश्र ने मान लिया । फिर क्या था ! शास्त्रार्थ की सूचना आग की भाँति सर्वत्र फैल गई ।

निश्चित समय पर सब एक विस्तृत स्थान पर आ उपस्थित हुए । मध्यस्थ के लिए एक सुरम्य पीठ पर विद्याधरी इस प्रकार सौम्यभाव से विराजमान थी, मानो देवताओं को पढ़ाने के लिए बैठी हुई सरस्वती हो । बच्चे, वृद्ध, सब एकटक उन्मीलित नेत्रों से विद्याधरी की ओर ही देख रहे थे ।

विचित्र दृश्य था ! विस्मय को विस्मय हो रहा था । चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था । आकाश भी मानो शास्त्रार्थ सुनने की उत्सुकता में स्तब्ध था । तब ठीक समय पर सहसा मोतियों की वर्षा-सी करती हुई मध्यस्था उभयभारती (विद्याधरी) ने कहा—'पूर्व निश्चयानुसार अब शास्त्रार्थ के नियमों का पालन करते हुए अपने-अपने समय का विशेष ध्यान रखेंगे तथा श्रोतागण भी बंधुभाव से यथास्थान बैठे हुए शास्त्रार्थ को श्रवण करेंगे और सभा की सौम्यता को स्थापित रखेंगे ।"

शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ । शास्त्रार्थ क्या था, तर्कों और युक्तियों का प्रबल संघर्ष था । दोनों-के-दोनों शास्त्र के पारंगत थे । जो बोलता, अपने-अपने अगाध पाण्डित्य से तथा अपनी अकाट्य युक्तियों से सारे श्रोताओं को अपनी ओर कर लेता था । श्रोतागण चकित थे कि आज यह क्या अभूतपूर्व घटना घट रही है ! श्रोताओं के मन यह निश्चय न कर पाए कि जिसके पक्ष में अपने मन को ले-जायँ ! दोनों में से कोई भी पराजित होता हुआ दिखाई न देता था ।

धीरे-धीरे शंकराचार्य की युक्तियाँ और उनके प्रमाण मण्डन मिश्र की युक्तियों और उनके प्रमाणों से प्रबल सिद्ध होते गए । परम विदुषी विद्याधरी तत्काल ही जान गई कि उसका पति कुछ पिछड़ गया है । उसने पति के तथा अपने मानापमान की तनिक भी चिंता न करते हुए स्पष्ट कहा, "कविर्दण्डी ! कविर्दण्डी ! कविर्दण्डी न संशयः !" अर्थात् निःसन्देह दण्डी स्वामी शंकराचार्य अधिक पण्डित हैं, वे विशेष विद्वान् हैं, वे जीत गए हैं ।

विद्याधरी का इतना कहना था कि शंकराचार्य की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । वह प्रसन्नता दूसरे पक्ष के लिए अप्रसन्नता का कारण थी, किन्तु क्या इससे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्याधरी के मुख पर तनिक भी मलिनता आई ? क्या उसके ललाट पर चिन्ता की नाममात्र की भी रेखा दिखाई दी ? क्या सौम्य मण्डन मिश्र का हँसमुख आकार अणुमात्र भी विकृत हुआ ? नहीं ! वे दोनों वैसे ही थे, जैसे शास्त्रार्थ से पहले, मानो वीतराग परमहंस हों। पर दार्शकों में से बहुतों पर इसका गहरा प्रभाव हुआ। उनमें से कइयों के सिर लटक-से गए। कुछ-एक की वाणी में शिथिलिता आ गई; कई उदास और उन्मत हो गए।

ऐसे समय में आनन्दमग्न शंकराचार्य जाने के लिए प्रस्तुत होने ही लगे थे कि विदुषी—रत्न विद्याधरी ने शंकराचार्य से इस प्रकार कहा—

'यद्यपि आप उनसे अधिक पण्डित हैं, तो भी आपने आज मेरे यशस्वी पति को पूर्णतः नहीं जीता, क्योंकि उनका आधा शरीर मैं हूँ और मैं आपसे जीती नहीं जा सकी। इसलिए हे बुद्धिमान् ? आप मुझे जीतकर ही उन्हें अपना शिष्य बना सकेंगे।'

मण्डन मिश्र की अर्धाङ्गिनी विद्याधरी की बात सुनकर शंकराचार्य भौंचक्के रह गये। उनसे न उठते बनता था, न बैठते। वे क्या कहें और क्या न कहें ! फिर कुछ काल तक सोचते रहने के पश्चात् दण्डी स्वामी शंकराचार्य ने कहा—

'हे अबले ! जो तुमने यह कहा है कि हृदय वाद-कलह के लिए उत्सुकता को प्राप्त हो रहा है, सो अनुचित है, क्योंकि महाशास्त्री पुरुष महिलाजनों से वाद-विवाद नहीं करते।'

इतना कहकर शंकर स्वामी ने कुछ स्मित-हास्य किया। उनके हृदय-वारिधि में पुनः विजय लहरा उठी। पर विद्याधरी ने तुरंत ही इस प्रकार उत्तर दिया।

'इस संसार में अपना मत सिद्ध करने के लिए जो प्रयत्न करता है, वह स्त्री हो या पुरुष, अपने पक्ष की रक्षा करने में उद्यत लोगों को चाहिए कि वे उसे जीतने के लिए अवश्य प्रयत्न करें। इसीलिए कल हँसीगार्गी से मुनिराज याज्ञवल्क्य ने, तथा अबला सुलभा से जनक ने शास्त्रार्थ किया था। क्या ये लोग महायशस्वी नहीं थे ?'

शंकराचार्य निरुत्तर हो गए। उन्हें विद्याधरी से शास्त्रार्थ करना ही पड़ा। यह वादविवाद सत्रह दिन तक होता रहा। वेदों और शास्त्रों के नए—नए प्रमाणों और तर्क तथा युक्तियों से यह शास्त्रार्थ इतना गम्भीर, इतना प्रौढ़, इतना प्रभावशाली तथा इतना विचित्र रहा कि बड़े-बड़े विद्वानों के लिए पूर्णतः उसका समझ सकना भी कठिन था। वह शास्त्रार्थ अपने-आप में एक बहुत महत्त्वपूर्ण तथा ज्ञान-मिश्रित शास्त्र रहा। दोनों एक-दूसरे को जीतने की उत्कट इच्छा से नानाविधि वाक्य बोलते थे। दोनों पंडित थे और अनेक विद्यानिष्णात थे। कोई भी पराजित होता दिखाई न देता था। तब उभयभारती ने अन्तिम वार किया। पति—विजयाभिलाषिणी विद्याधरी ने प्रश्न किया, 'काम की भीतरी और बाहरी कितनी कलाएँ हैं ?

यह प्रश्न बालब्रह्मचारी दण्डी स्वामी शंकराचार्य के लिए सचमुच अपरिचित था। वे स्तब्ध—से हो गए। उन्होंने कहा, "मैंने ब्रह्मचर्याश्रम से ही संन्यास ले लिया हैं, इसलिए मैं काम के संबंध में नहीं जानता इसलिए आप का उत्तर देने में असमर्थ हूँ।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर क्या था ! विजय-ध्वजा विद्याधरी के पक्ष में लहराने लगी। मण्डन मिश्र का उदास आनन उषा-समय की किरणों से सौरभ विकसित कमल की भाँति खिल उठा और विद्याधरी का यशःसौरभ दिग्दिगन्त में प्रसारित हुआ।

इस घटना की रेतीली तह तक जानेवाले कथांवेषक भले ही यह बतलावें कि शंकराचार्य ने कुछ अवधि लेकर पुनः इस प्रश्न का उत्तर दिया, किन्तु यह सर्वथा सत्य है कि शास्त्रार्थ को प्रत्यक्ष सुनने वालों के अतिरिक्त अन्य भी जिस-जिसने उस वाद-विवाद की वार्ता सुनी, उस-उसने विद्याधरी की प्रशंसा ही की।

आज भी विदुषियाँ और विद्वान् 'विद्याधरी' का यशोगान गा—गाकर अपनी रसंना की रसमयी बनाते हैं। विद्याधरी—जैसे विदुषी महिलाओं से भारत का मस्तक विशेष गौरवन्वित हुआ है।

सड़े अन्न का दान

एक सेठ जी ने अन्नक्षेत्र खोल रखा था। दान की भावना तो कम थी; समाज उन्हें दानवीर समझे, उनकी प्रशंसा करे, यही एकमात्र मुख्य इच्छा थी। उनके प्रशंसक लोग कम थे भी नहीं। सेठजी गल्ले के थोक व्यापारी थे। अन्न के कोठरों में वर्ष के अन्त में जो घुना-सड़ा अनाज बिकने से बचा रहता था, वह अन्नक्षेत्र के लिए दे दिया जाता था। प्रायः सड़ी ज्वार की रोटी ही सेठजी के अन्नक्षेत्र में भूखों को प्राप्त होती थी।

सेठजी के पुत्र का विवाह हुआ। पुत्रवधू घर आयी। वह सुशील, धर्मज्ञ और विचारशील थी। अपने श्वसुर का व्यवहार देखकर उसे दुःख हुआ। भोजन बनाने का भार उसने स्वयं उठाया तथा पहले ही दिन अन्नक्षेत्र से सड़ी ज्वार का आटा मंगाकर उसने एक रोटी बनाई। सेठजी भोजन करने बैठे थे। दूसरे भोजन के साथ उनकी थाली में वह रोटी भी पुत्रवधू ने परोस दी। काली, मोटी रोटी देखकर सेठजी ने कुतूहलवश पहला ग्रास उसी का मुख में डाला और थू-थू करके थूकते हुए बोले—'बेटी, घर में आटा तो बहुत है। तूने रोटी बनाने के लिए यह सड़ी ज्वार का आटा कहाँ से मंगाया ?'

पुत्रवधू बोली—'पिताजी ! आपके अन्नक्षेत्र में इसी आटे की रोटी भूखों को दी जाती है। परलोक में तो वही मिलता है जो यहां दिया जाता है। वहाँ केवल इसी आटे की रोटी पर आपको रहना है। इसलिए मैंने सोचा कि अभी से इसे खाने का अभ्यास धीरे-धीरे आपको हो जाए तो वहाँ कष्ट कम होगा।'

कहना नहीं होगा कि अन्नक्षेत्र का सड़ा आटा उसी दिन फिकवा दिया गया तथा वहाँ अच्छे आटे का प्रबन्ध हो गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पं० वेदभूषण अधिष्ठाता वेद प्रतिष्ठान ज्ञानगंगासुलतान बाजार हैदराद २७

ऋषिकृत मन्त्र और उसका रहस्य

मुख्यतया वेदों में जो छन्दोवद्ध ऋचाएँ हैं उन्हें हम मन्त्र नाम से पुकारते हैं। चारों वेदों में प्रकाशित ये समस्त मन्त्र हमारे ज्ञान के आदि स्रोत हैं। ये केवल ज्ञान के ही आदिस्रोत नहीं अपितु समस्त बोल-चाल की मानवीय भाषाओं के भी आदिस्रोत हैं! इन वेदों का प्रकाशक वही चेतन तत्व है जिसने सृष्टि की रचना की और आकाश में सूर्य को जगमगाया। और जो सम्पूर्ण जगत् का एकमात्र स्वामी है।

निश्चय ही वेद मन्त्रों की रचना अद्भुत् है! जिस प्रकार एक छोटे से बीज में से विशाल वट वृक्ष निकल आता है उसी प्रकार एक-एक अक्षर और शब्द व शब्द समूह से अनन्त ज्ञान प्रस्फुटित होता है। इसीलिए नीतिकार ने कहा है कि—

"अनन्त पारं किल शब्द शास्त्रं"

प्राचीन शब्द शास्त्री ऋषि महर्षियों ने वेद के एक-एक मंत्र पर सारा जीवन खपा दिया तब वे कहीं एक एक मन्त्र का दर्शन कर सके। मन्त्र को प्रत्यक्ष कर सके! ऐसे मन्त्र द्रष्टा व्यक्ति ऋषि कहलाए! ऐसे कुछ परम वैज्ञानिक ऋषियों के नाम उन उन मन्त्रों पर आज भी अंकित है! वेद की मूल संहिताओं में अद्यावधि इन ऋषियों के नाम उल्लिखित हैं।

वेद मन्त्रों पर जितना चिन्तन और मनन किया जाए वह थोड़ा ही है। नए-नए चिन्तन से हमें नई-नई बातें उपलब्ध होती हैं! ज्ञान के नए-नए स्रोत फूट पड़ते हैं। आवश्यकता है निरन्तर मन्त्रों के मनन की।

पृथ्वी के साथ लहराते समुद्र में अनन्त काल से गोताखोर गोते लगाते रहे हैं और बहुमूल्य रत्न निकाल रहे हैं। समुद्रगर्भ से ये रत्न पहले भी निकाले जाते रहे हैं और आज भी निकाले जाते हैं और आगे भी निकाले जाते रहेंगे। यह तो संभव हो सकता है कि समुद्र गर्भ के सभी रत्नों को मनुष्य निकाल ले पर यह कभी संभव नहीं है कि एक मन्त्र के समग्र ज्ञान को कोई व्यक्ति अभिव्यक्त कर दे।

मन्त्रों पर जितना चिन्तन और मनन होगा उसमें से नए-नए अर्थ प्रकाश में आते रहेंगे। अनेक संदर्भों में भिन्न-भिन्न प्रकार के अर्थ आज भी साधारण चिन्तन से ही सामने आ जाते हैं।

भूलोक से सम्बन्धित, गृहस्थ और समाज धर्म से संबन्धित अनेक मन्त्रों का सार ग्रहण कर आश्वलायन ने कुछ मंत्रों की रचना की थी! मन्त्र द्रष्टा ऋषि वेद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन्त्रों के आधार पर वैदिक विज्ञान के समर्थन में वैदिक शब्दों से कुछ मन्त्रों की सी रचना करते रहे हैं। आरण्यक और ब्राह्मण ग्रन्थों में तथा गृह्यसूत्रों में इस प्रकार के मन्त्र उपलब्ध होते हैं। ऐसे महत्वपूर्ण मन्त्रों को भी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने वैदिक यज्ञों में बड़ा महत्त्व प्रदान किया है। यह ठीक है कि प्रभु के दिव्य ज्ञान के सार भूत वेद मन्त्रों का महत्त्व निश्चय ही मनुष्य कृत मन्त्रों से कहीं अधिक होता हैं किन्तु महर्षियों द्वारा रचित मन्त्रों में भी बहुत सार भरा हुआ है। हम इस लेख में एक ऐसे ही मन्त्र को प्रस्तुत करने जा रहे हैं।

महर्षि दयानन्द ने देव यज्ञ में इस मन्त्र को बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया है। मन्त्र इस प्रकार है।

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्धवर्धय। चास्मान्
प्रजया पशुभि ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय-स्वाहा-इदमग्ने जातवेदसेइदंन्न मम्॥

यह मन्त्र बहुत ही सारगर्भित है! यही कारण है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक देव महा यज्ञ में सर्व प्रथम आहुति जो एक समिधा के रूप में दी जाती है इसी मन्त्र से देने का विधान रक्खा है। इतना ही नहीं तीन समिधाओं के बाद पुनः इस मन्त्र को पांच बार पढ़कर पाँच घृताहुति का विधान भी बना दिया है।

इस मन्त्र के सारगर्भित अर्थ पर विचार करने से पूर्व हम समिधाधान और पाँचघृताहुति के रहस्य पर कुछ विचार कर लें।

यह बात यहाँ पर समझ लेनी चाहिए कि जिस प्रकार ब्रह्म यज्ञ अर्थात् सन्ध्या का संबन्ध अध्यात्म से अर्थात् आत्मा और परमात्मा से है। ब्रह्म यज्ञ का लौकिक भाषा में सरलार्थ है ईश्वर पूजा। चेतन पूजन। और देव यज्ञ का सम्बन्ध जड़ जगत से है। यदि हम यह कहें तो अयुक्त न होगा कि—देव यज्ञ का अर्थ है जड़ पूजा! इस देव पूजा के द्वारा हम तेतीस कोटि अर्थात् प्रकार के जड़ देवताओं का पूजन या अर्चना करते हैं। इसका कदाचित यह अभिप्राय नहीं है कि यज्ञ का आध्यात्मिक महत्त्व ही नही है। किन्तु प्रधान रूप से यज्ञ भौतिक जगत की शुद्धि का कारण है। इस देवयज्ञ में शिल्पविज्ञान और भौतिक विज्ञान भी समाहित है।

हमारा यह सौर जगत तीनों लोकों में विभक्त है। देव यज्ञ प्रारंभ में ही हम तीनों लोकों को भूलोक, अन्तरिक्ष लोक और द्युलोक की शुद्धि करने का संकल्प दोहराते हैं।

तीन समिधाओं की आहुति भी तीनों लोकों के लिए दी जाती है। इस प्रकार प्रस्तुत मन्त्र का सम्बन्ध भूलोक से है। वेद में भूलोक विज्ञान से सम्बन्ध रखने वाले अनेक मन्त्र हैं पर आश्वलायन महर्षि ने इस एक मन्त्र में अनेक वेद मन्त्रों का सार संग्रहित कर दिया है। और बड़े सरल रूप में यज्ञ के चार प्रकार के फलों से भूलोक को अलंकृत करने के भाव प्रस्तुत कर दिए हैं। और इस भूलोक के लिए पाँच प्रकार के वरदान भी माँग लिए हैं। इन पाँच वरदानों का सम्बन्ध विशेष रूप से गृहस्थ से है। वास्तव में कर्मकाण्ड का सम्बन्ध विशेष रूप से गृहस्थाश्रम से है। ज्ञान काण्ड का ब्रह्मचर्याश्रम से और कर्मकाण्ड का गृहस्थ से और उपासना काण्ड का वानप्रस्थ से विशेष सम्बन्ध माना गया है। संस्कार विधि कर्मकाण्ड का ग्रन्थ है इसमें वर्णित सामान्य प्रकरण का यज्ञविधान गृहस्थ से विशेष रूप से सन्नद्ध है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विवाह संस्कार, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन और जात कर्म इन पाँचों संस्कारों का सम्बन्ध पति और पत्नी से ही विशेष है। पुनः जातकर्म संस्कार से लेकर और सन्यास तक संस्कारों का सम्बन्ध व्यक्ति से है और सोलहवें अन्तिम संस्कार का सम्बन्ध समाज से है ! अर्थात् पूर्व के संस्कार व विवाह का सम्बन्ध प्रधानरूपेण पति पत्नी से है। शेष का प्रधान रूपेण व्यक्ति मात्र से है और अन्तिम संस्कार का सम्बन्ध प्रधान रूप से समाज से है ।

प्रस्तुत मन्त्र में प्रजा, पशु ब्रह्मवर्चस् और अन्नाद के लिए जो प्रार्थना है यह प्रार्थना स्पष्ट रूप से गृहस्थ के लिए है। प्रजा की उत्पत्ति या निर्माण, पशुओं का पालन पोषण, और अन्न इनका संरक्षण तो गृहस्थी है। अतः यह बात मन्त्रार्थ से ही स्पष्ट है कि-इन मन्त्रों का पाठ गृहस्थी ही करेगा। इस प्रकार ब्रह्मचारी और वानप्रस्थ इन मन्त्रों से पाँच घृताहुति नहीं देगा ! और न ही उसे देनी चाहिए ! समिधाधान में भूलोक से विनियोग होने के कारण समिधाधान सभी के लिए अनिवार्य है।

इस पृष्ठ भूमि के साथ आइए हम प्रस्तुत मन्त्र के अर्थ पर विचार करें। सामान्य तथा वेद मन्त्रों में एक वाक्य में एक एक क्रियापद का प्रयोग किया गया है कहीं कहीं दो क्रियापद भी उपलब्ध होते हैं। पर इस मन्त्र में छः क्रियापद प्रयुक्त हुए हैं। जो इस प्रकार हैं। इध्म, इध्यस्व, वर्धस्व, इद्ध, वर्धय, एधय।

लगभग अद्यावधि किए गए इस मन्त्र के अर्थ में सभी ने इन क्रियापदों का एक साथ प्रकाशित करो और बढ़ाओ मर्ग कर दिया है। हमारी विनम्र सम्मति में इस प्रकार का अर्थ न तो तर्क संगत और न ही युक्तियुक्त ही कहा जाएगा।

हमने जब अपनी यज्ञ ज्योति पुस्तक लिखते समय इस मन्त्र पर चिन्तन किया तो हमें इन क्रियापदों का कुछ रहस्य समझ में आया जो बहुत ही सटीक और सुन्दर प्रतीत होता है ।

सर्व प्रथम मन्त्र का प्रथम भाग है अत्यंन्त इध्म आत्मा जातवेदस् ! हे जातवेदः अयं अत्मा ते इध्मः' प्रथम क्रियापद इध्मः, का स्पष्ट सम्बन्ध इसी वाक्य से सम्बन्ध रखता है ! हमने इस यज्ञ के द्वारा स्वयं को प्रकाशित करना है ! कर्मकाण्ड के द्वारा हमारा कर्मकाण्ड प्रधान यह गृहस्थ धर्म कैसे प्रकाशित होगा ! इसको हम किसके द्वारा प्रकाशित करें इसका उपाय तेन इध्यस्व, वर्धस्व, च इधै वर्धय च अस्मान् ! यहाँ केन इध्यस्व का उत्तर है कि अस्मान् तेन इध्यस्व। तेन केन ?

प्रजया, पशुभिब्रह्मयहर्चसेन् अन्नद्येन ! यह इसका उत्तरपक्ष है।

इस मन्त्र के अर्थ में बहुधा हम कह बैठते हैं कि-प्रजयावर्धस्व या वर्धय ! हमारी प्रजा खूब बढ़े ! आज तो प्रजा वर्धन के नाम मात्र से हमारी सरकार थर्रा जाती है ! वह तो सन्तति निग्रह [Birth Control] का नारा लगा रही है ! हमारी दृष्टि में भी प्रजा बढाने का नारा वैदिक नारा नहीं है। प्रस्तुत मन्त्र भी इसी बात का पोषक है। मन्त्र प्रजा के वर्धन की बात नहीं कहता। हमने मन्त्र के अर्थ को सही रूप में समझा ही नहीं।

मंत्र को समझने के लिए आवश्यक होगा कि हम बहु क्रियापद के झमेले को सुलझा लें। इन क्रियापदों के सही विनियोग से सारी समस्या स्वयं ही सुलझ जाएगी। वास्तव में इन छहो क्रिया पद के मध्य के चार क्रियापदों की संगत इन चार शब्दों या वरदानों से करनो होगी तब हमें मन्त्र का भाव स्पष्ट रूपेण समझ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में आवेगा । सो संगति इस प्रकार होगी कि—अस्मान् प्रजया इध्मस्व, पशुभिः वर्धस्व, ब्रह्मवर्चसेन् च इद्ध अन्नाद्येन वर्धय ।

यह संगति यथा क्रम शब्दों के संयोग से बनती है । अब बात स्पष्ट हो रही है कि भेड़, बकरी, गाय आदि के लिए वर्धस्व का प्रयोग किया गया है पर हमने मनुष्य को पशु के समान सन्तान वर्धन की छूट दे रक्खी है । वर्धन पशुओं का होगा । मनुष्य तो उत्तम सन्तान के द्वारा इध्यस्व प्रकाशित होगा । अर्थात् सुसंस्कारित सन्तान को जन्म देना गृहस्थ का कर्तव्य है न कि—भेड़ बकरी के समान बच्चे पैदा कर देना ॥

इसमें भी पुनः प्रजा को प्रकाशित करने का भी उपाय बतला दिया है कि प्रजया ब्रह्मवर्चसेन् इध्य स्व अथवा इद्ध और पशुभि अन्नाद्येन् वर्धस्व अथवा वर्धय ! प्रजा अथवा मनुष्य तो ब्रह्मवर्चस् के द्वारा प्रकाशित होता है और पशु अन्न से बढ़ता है । कितनी ज्ञान की बातें इस मन्त्र में निहित हैं ।

केवल बल को बढ़ाने वाला अन्न जिसे विटामिनों से भरपूर कहा जाता है वह मनुष्य की लक्ष्यसिद्धि में सहायक नहीं हो सकता ? हमारे लिए तो वह अन्न उपयोगी होगा जो हममें ब्रह्मवर्चस् को उत्पन्न करेगा । इसीलिए अण्डे या मांस हमारा अन्न नहीं बन सकते । इसके सेवन से ओज जो बुद्धिवर्धक होता है वह बन नहीं सकता यह तो ब्रह्मवर्चस् को घटाता है । इस प्रकार हम प्रजा सुप्रजा प्रकृष्टतया जायते इति प्रजा से प्रकाशित हों ! और पशुओं के द्वारा बढ़े अर्थात् पशुधन को बढ़ा कर उसके स्वामी बनें । ब्रह्मवर्चस के द्वारा प्रकाशित हों ओज और ज्ञान के द्वारा जगमगाएँ और अन्नाद भोग्य पदार्थों को बढ़ावें । यहाँ एक बात और ध्यान देने योग्य है कि यहाँ दो चकारों का प्रयोग हुआ है' चेद्ध वर्धय चास्मान्' दो चकार होने का प्रयोजन यह है कि—अन्नाद्य दो प्रकार का होता है । एक तो वह अन्न जो हमारे शरीर को तृप्त करता है एक और अन्नाद्य आद्य अन्न है परमात्मा । आत्मा जिसे खाकर तृप्त होता है इस प्रकार गृहस्थीजन इस मन्त्र को पाँच वार पढ़ कर पाँच वरदान मांगते हैं कि-प्रजा, पशुब्रह्मवर्चस् और दो प्रकार का अनाद्य उन्हें प्राप्त इसमें प्रजा पशु और अन्न बढ़ाने या प्रकाशित करने का कार्य गृस्थी का ही है ! ब्रह्मचारी और वानप्रस्थ तो शिक्षा चरण करते हैं और प्रजा और पशुपालन से भी बचते हैं । ब्रह्मचारी प्रारंभ में पशुपालन का प्रशिक्षण अवश्य लेता है पर उसका बहुमूल्य समय ज्ञानोपार्जन में ही लगता है । वानप्रस्थ उपासना योग में रत रहता है । कर्मकाण्ड का प्रतिनिधि गृहस्थ होता है । गृह्य सूत्रों में अधिकांश कर्मकाण्ड प्रधान मन्त्र ही है । इस प्रकार हमारा यह निश्चित मत है कि-इस मन्त्र से पांच घृताहुति का विधान केवल गृहस्थ के लिए ही है । इस मन्त्र का जो अन्तिम शब्द है वह बहुत ही अदभुत् है और हमारे इस मत का भी पोषक है ।

वह शब्द है समेधय । ये जो पाँच वरदान गृहस्थ ने माँगे हैं इनमें सदा संतुलन रहे । प्रजा पशु ब्रह्मवर्चस् और दोनों प्रकार के अन्नाद्य में सन्तुलन होगा तभी हमारा गृहस्थ आश्रम सुखी व सफल होगा !

आज सन्तुलन के बिगड़ जाने से ही हाहाकार मचा हुआ है ! अन्न कम और प्रजा अधिक । पशु कम प्रजा अधिक । इसी प्रकार गृहस्थ के लिए प्रभु भक्ति भी सन्तुलित करनी होती है । उसे प्रभु भक्ति के अलावा बीवी बच्चों की और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सांस्थान के नए प्रकाशन

१. आर्याभिविनय
काव्यमय व्याख्या — अजिल्द १.५०

२. उपदेश मंजरी
महर्षि के पूना व्याख्यानों का संग्रह — मूल्य १.५०

३. प्रभु के चरणों में
पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार — मूल्य १.५०

४. आदर्श परिवार
पं० जुगल किशोर चतुर्वेदी
(विवाह पर बांटने योग्य पुस्तक) — मूल्य ६० पैसे

५. धर्म-सार
स्व० पं० गंगाप्रसाद जी की अनमोल
रचना : साधारण जनता में प्रचार के लिए — मूल्य १ रु०

६. गीता-भाष्य
स्व० पं० आर्यमुनि जी कृत — मूल्य १५ रु०

७. संस्कार-विधि
छोटा साईज ३) अजिल्द
राज संस्करण बड़ा साईज ४) अजिल्द
कपड़े की जिल्द मूल्य ६)

८. धरती का स्वर्ग
पं० शिवकुमार जी शास्त्री
(सदस्य लोक सभा) — मूल्य १.५०

९. वेदांजलि
४०० बड़े साइज के पृष्ठों की
अनुपम प्रार्थना पुस्तक — मूल्य १५ रु०

शीघ्र मंगाइए

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-११०००५

मुद्रक :—प्रकाशक—सम्पादक
पं० राकेश रानी द्वारा रामलीला प्रिंटरी, दिल्ली में मुद्रित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक)
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
करोल बाग, नई दिल्ली-५
दूरभाष ५६६६३९

D.A.V.P. से स्वीकृत
सितम्बर १९७६

रजि० नं०
डी०—(सी०) २०१
R.N.No. 107119/65

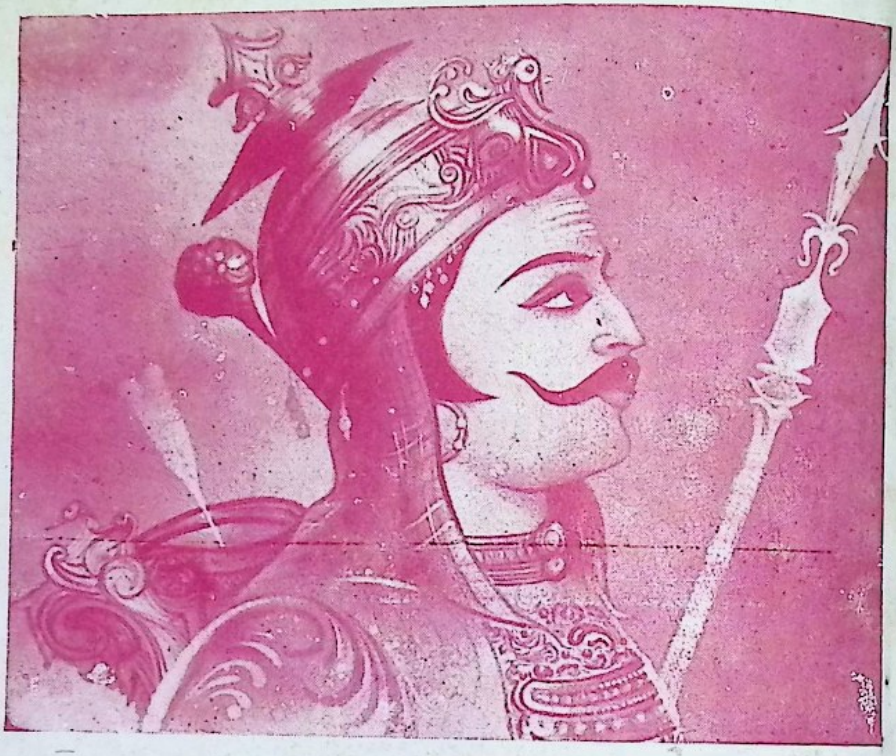

प्रणवीर महाराणा प्रताप

जिनकी शौर्य गाथाएं आज भी भूमंडल में गूंज रही हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi